जन गर्जन

पूँजीपति कारपोरेट शिकंजे के विरुद्ध - जनता के विकल्प को मजबूत करो

देवब्रत बिश्वास, महासचिव, अखिल हिन्द फारवर्ड ब्लॉक

इसमें कोई संदेह नहीं कि द्वार पर दस्तक देती लोकसभा चुनाव के दृष्टिगत राजनीतिक पार्टियों ने चुनावी युद्ध का सामना करने के लिये अपने-अपने पार्टी संगठन और चुनावी मशीनरी को तेज कर दिया है। इस चुनावी व्यूह रचना में एक तरफ इन दलों ने जन सम्पर्क तेज कर दिया है वहीं दूसरी ओर अपने चुनावी घोषणापत्र को जनता के सम्मुख प्रस्तुत करना शुरू कर दिया है। आम चुनाव के ठीक पूर्व राजनैतिक दलों में आई इस तीव्रता में कुछ भी नया नहीं है।

परन्तु जनता के दृष्टिकोण और भावना की एक तीव्र अन्तरधारा बह रही है जो किसी भी तरह आने वाले आम लोकसभा चुनाव में चुनावी ट्रेड स्थापित करने में कम महत्वपूर्ण नहीं है। इस अन्य चुनावी ट्रेड को स्थापित करने में मुख भाग नियामक और निर्णायक रूप से देश के बड़े कारपोरेट घराने अदा कर रहे हैं। कारपोरेट घरानों की मूल चिंता यह है कि सत्ता में आने वाला राजनीकि दिल किस सीमा तक उनके हितों का पोषण करते हैं और उनमें कौन सा दल आगे है। वास्तव में आजादी प्राप्त करने के बाद के काल मेमं यह हमारा दु:खद अनुभव रहा है कि शुरू से ही चयनित होकर केन्द्र में आने वाली सरकारें देश के पूँजीपतियों और कारपोरेट घरानों के हित पोषण में लगी रहीं और उनके अनुकूल आर्थिक और राजस्व कर की नीतियाँ बनाते रहे हैं। यह सत्य है कि आजादी प्राप्ति के बाद कांग्रेस पार्टी ने अधिकतम काल और अवधि तक देश पर शासन किया। हाल के वर्षों में भाजपा भी देश की सत्ता पर अधिकार जमाने वाले दलों में प्रमुख बन कर केन्द्र में आयी। परंतु इन दलों - कांग्रेस व भाजपा ने पूँजीपतियों व कारपोरेट घरानों के हितों के पोषण करने वाली आर्थिक नीतियाँ बनायी जो मूलरूप से पूँजीवादी अर्थव्यवस्था रही है।

इस उपर्युक्त चुनावी ट्रेड में कारपोरेट घरानों ने अपने लक्ष्य को पाने के लिये विशिष्ट व्यक्तियों को चुनना शुरू कर दिया जिन्हें आने वाले भविष्य में देश की अर्थतंत्र की बागडोर सौंपी जा सके। देश के सभी कारपोरेट घराने एक ही व्यक्ति को पसंद कर रहे हों ऐसा भी नहीं है। वे अपने आंकलन और विचार में भिन्नता रखते हैं। कारपोरेट हाउसों के एक समूह ने गुजरात के मुख्यमंत्री नरेन्द्र मोदी को प्रस्तुत किया। मोदी को भाजपा के एक भाग का समर्थन प्राप्त है। वे मोदी को लालकृष्ण आडवानी से बेहतर विकल्प मान रहे हैं। विकास के नाम पर टाटा और अम्बानी ने मोदी की गुहार लगाई। मोदी को कारपोरेट घरानों द्वारा प्रवर्तक के रूप में घोषित कर रहे हैं। एक समय निर्मम साम्प्रदायिक वैमनस्व और हिंसा के लिये कुख्यात प्रतीक रहे मोदी का कारपोरेट विकास का प्रवक्ता और नेता बनना और मोदी - कारपोरेट गठजोड़ गहरी चिंता का कारण बन गया है।

लेकिन इसका यह आशय कदापि नहीं है कि हम दूसरे आडवाणी समूह या मनमोहन सिंह समूह की तरफदारी कर रहे हैं। ये दोनों ही समूह समान रूप से पूँजीपतियों के गुटों से सम्बद्ध हैं और मनमोहन सिंह के साथ अतिरिक्त अमेरिकी रूझान का तड़का लगा है। अवकाश प्राप्त निवर्तमान अमेरिकी राष्ट्रपति जार्ज डब्ल्यू बुश ने अपने विदाई भाषण में घोषित किया कि उनके कार्यकाल की अद्‌भुत सफलता यह रही कि असंदिग्ध रूप से उन्होंने भारत को पूरी तरह अमेरिकी पाले में खींच लिया। इस रणनीति में देश के लिये अन्य गहरा खतरा जुड़ गया है।

जहाँ तक वर्तमान संप्रग सरकार की नीतियों का प्रश्न है विश्व मे आई हाल की आर्थिक मंदी का दुष्प्रभाव भारतीय अर्थव्यवस्था पर परिलक्षित हो रहा है। आर्थिक मंदी से बचने के लिये उठाये गये अमेरिकी कदमों के समान भारत में मनमोहन सिंह उसी तरह के कदम उठा रहे हैं। अमेरिकी सरकार जनता के राजस्व को लेकर भारी भरकम कारपोरेट घरानों की रक्षा में आर्थिक तौर पर राहत पहुँचा रही हे। कुछ इसी तर्ज पर घोटालों से कुख्यात हुई सत्यम कम्प्यूटर कंपनी को बचाने के लिये मनमोहन सरकार हरकत कर रही है। सत्यम काण्ड एक भयावह घोटाला है जिसे कहीं से सरकार की सहायता या सहारा की जरूरत नहीं है। जनता के विशोल शेयर धन के साथ खिलवाड़ करने वाला इकलौता मामला नहीं है। यह सतत् मांग की जा रही है कि शेयर बाजार और कारपोरेट मामलों पर कड़ा सरकारी नियंत्रण बनाया जाये। परंतु सरकार ऐसे किसी कदम से आनाकानी करती रही हैं।

जब आम लोकसभा का चुनाव सामने आ खड़ा हुआ है, कांग्रेस व भाजपा जैसी पार्टियों के ऊपर बढ़ते पूँजीपतियों व कारपोरेट घरानों के कसते शिकंजे के दुष्प्रभाव के प्रति जनता में चेतना जागृत करने की बहुत आवश्यकता है। आने वाली भावी सरकार जनता के विकल्प से बने जिससे गरीब और आम जन के हित की रक्षा हो सके और देश का बेहतर भविष्य बनें।

कैसे बनें एक अच्छे देशभक्त - सुभाष चन्द्र बोस

(निम्नलिखित अहस्ताक्षरित लेख आजाद हिन्द सरकार के द्वारा सन् 1944 में प्रकाशित अँग्रेजी मुखपत्र से लिया गया है। यह पूरे विश्वास के साथ स्वीकार किया जा सकता है कि यह लेख नेतीज द्वारा लिखित है, क्योंकि इसमें प्रयुक्त शब्दों, भाव का प्रवाह उनके पूर्वलिखित लेखों से पूरी तरह मेल खाता है। एकता, बलिदान और विश्वास के साथ उन्होंने सदैव 'प्रेम' का प्रचार किया जिसका तात्पर्य आम जन से प्रेम, मानवता से प्रेम है। जब हम किसी चीज से प्रेम करते हैं, तब हम उस चीज के प्रति अपना विश्वास समर्पित करते हैं, उसके अंदर हम जीवन के बीच जरोपते हैं और वह एक शक्ति होती है जिसे सुपरनेचुरल या ईश्वर कहा जा सकता है या जिसे ऐसा लोगों के अनुसार नेताजी मानते थे। सुभाष चन्द्र बोस किसी धार्मिक पंथ के प्रति न तो लगाव विशेष स्वीकार करते थे और न ही किसी धार्मिक पंथ के विरुद्ध थे, बल्कि उनकी सेना विभिनन्न-विभिन्न धर्म के अनुयायियों के द्वारा निर्मित थी जिसमें अपने रीति-रिवाजों के अनुसार पूजा करने की छूट थी। जहाँ नेताजी ने सर्वोपरि जनता और देश के प्रति प्रेम को प्रतिपादित किया उसके बाद धार्मिक विश्वासों

की महत्ता स्वीकार किया है। इस आद्वितीय 'संविधान' को इस तरह शीर्षक दिया जा सकता है कि कैसे अच्छे देशभक्त।)

आदिकाल से ही मानव अपने दु:ख और पीड़ा के समय शक्ति, साहस और दृढ़ता के लिये किसी सुपरनेचुरल शक्ति की कल्पना कर पूजता हैं। शांति और खुशहाली मिलने पर उसने निर्माता, स्वयं के बारे में और आने चारों और के ब्रह्मांड के बारे में सोचने और समझने का प्रयास किया है। इस शक्ति को अलग-थलग लोगों ने अलग-अलग नाम दिया है। परंतु सभ्य समाज के अधिकांश लोगों ने उसे ईश्वर कह कर पुकारा है। हम निर्माता ईश्वर के अस्तित्व को अनुभूत करते हैं, जब हम अपने चारों और खूबसूरत ब्रह्मांड को पाते हैं और जब हम अपने चारों ओर संचालित होने वाले नियमों और प्रकृति में तारम्यता और नियमितता पाते है। हम ईश्वर को अनुभूत करना शरू कर दते हैं और हम उससे प्रसारित प्रेम और आशीष को अनुभूत करते हैं। बिना उसके प्रेम आशीष और दया के मनुष्य खुशहाली से नहीं जी सकता है।

पूरी दुनियाँ में लोग ईश्वर को विभिन्न-विभिन्न रूपों में मानते हैं। कुछ उसका ध्यान मूर्ति आकृति (साकार) रूप में करते हैं। कुछ उसके आकार हीन निराकार रूप पर ध्यान लगाते हैं। उस सत्ता की ओर जोन का जो भी मार्ग हो, उसके जिस धार्मिक स्वरूप की अवधारणा स्वीकार की जाये - एक सार्वभौमिक तथ्य प्रकाश में आता है और सभी स्वीकार करते हैं कि ईश्वर है। वह सबका सब चीजों का मूल स्त्रोत है। वह हर संजीदा और मृत चीजां का निर्माता, रक्षक और विनाश करने वाला है। ईश्वर सर्वशक्तिमान, सर्वत्र और सर्वज्ञ है। पूरा ब्रह्मांड उसमें हैं। वह सभी जीवित और मृत में प्रसारित है। हर अच्छाई और बुराई में है। ईश्वर महान है। वह असीमित है पर सीमित चीजों में दिखता है। जबकि वह समय और स्थान द्वारा मापा नहीं जा सकता है। वह शाश्वत है। वह दयावान है और सच्चे दृढ़ प्रार्थना को सुनता है। सामान्यतया वह अनुभूतियों से परहे हैं; पर उसे अनुभूत किया गया है और उसके दर्शन महामानवों ने किये हैं जिसे कुछ ने अवतारवाद की संज्ञा दी है तो कुछ ने पैगम्बर कहा है। नि:संदेह रूप से गहरे और नियमित ध्यान लगाकर मानसिक संतुलन और शांति पायी जा सकती है। जो सामान्य तौर पर अप्राप्य है। नियमित ध्याना केन्द्रीत कर महामानवों ने ईश्वरीय अनुभूति को प्राप्त किया है। हमें भी अपने समय से प्रतिदिन थोड़ा वक्त साहस, आत्मविश्वास, संतुलित निर्णय, प्रेम, खुशी और शांति के लिये निकालना चाहिये। उपर्युक्त आदर्श को जीवन संचालित करने वाली शक्ति बनाने के लिये हमें पूरा यत्न करना चाहिये।

ईश्वर और मानव के बीच का रिश्ता बहुत मधुर होता है जैसे एक पिता और पुत्र का, एक मित्र का मित्र की तरह, एक प्रेमी का प्रेमिका क बीच का। जब भी कभी कुछ करना हो तो पहले ईश्वर का ध्यान करो उनसे ही अपने उद्देश्य के संदर्भ में उत्तर प्रात्प करो। यदि ध्यान पर्याप्त मेहनत से किया गया है तो ईश्वर हमारी प्रार्थना पर सही समय पर ध्यान देता है। हमें ईश्वर के प्रति श्रद्धा और प्रेम करना चाहिये।

हमें अना कर्म अवश्य करना चाहिये परन्तु स्वार्थ से प्रेरित नहीं करना चाहिये और हर दशा में कर्म के फल को प्रदान करने का कार्य ईश्वर के ऊपर छोड़ देना चाहिये। यह सिद्ध तथ्य है कि ईश्वर उसी की सहायता करता है जो अपनी सहायता स्वयं करता है। अकर्मण्यता से कोई ईश्वरी प्रेम आशीष नहीं प्राप्त कर सकता है। सही वक्त पर सही सोच और कर्म करना चाहिये। तभी हम ईश्वर की कृपा से उसके द्वारा प्रसारित प्रेम और शांति के सौन्दर्य को देख सकते हैं।

ईश्वर जीवन का आदर्श है, वह मानव का निर्देशक और दार्शनिक है। तनाव और अवसाद की मुक्ति हेतु बुराई को नष्ट करो और अच्छाई की रक्षा करो। ईश्वर विभिन्न समय पर दुनिया के अन्य भागों में अपने स्वरूपों में बिखरा पड़ा हैं।

मानव ईश्वर की सबसे अच्छी कृति है। वह हर वक्त हर व्यक्ति में उपस्थित होता है। जैसा कि ईश्वर अपने हर पैदा किये जीव को प्यार करता है, वैसे ही हमारा भी कर्तव्य बनता है कि हम सभी के साथ बिना किसी जातिगत व क्षेत्रगत भेदभाव के सबसे प्रेम करें। यदि कोई ईश्वर में सच्ची श्रद्धा रखता है और ईश्वर से वास्तविक प्रेम करता है तो उसे अवश्य ही मानवता से प्रेम करना चाहिये। मानवता से प्रेम और उसके सिद्धांत पर चल कर हम मानव महान नतीजों को प्राप्त कर सकते हैं और ऊँचाई को प्राप्त कर सकते हैं। यह सिद्ध तथ्य है कि प्रेम सबको जीत लेता है। एक व्यक्ति जो आपको घृणा देता है यदि आप उसकी बुराई को अनदेखा कर अपना प्यार देते रहते हैं तो एक वक्त ऐसा आता है जब वह अपना नजरिया बदल देता है और अनुकूल व्यवहार करता है। मानतवा के प्रति प्रेम होने वाले हमारे सभी कार्यों में प्रेम आधार होना चाहिये। पूरी दुनियां में व्याप्त झगड़ों, विपदाओं के बावजूद ईश्वर का प्रेम और उसकी सहानुभूति अनेक रूपों में व्याप्त है और फैल रही है। यह हमारी जिम्मेदारी है कि हम अपने साथ के हर प्राणी को प्रेम दें, उनके अभाव दूर कर उनके खुशहाल जीवन के लिये शारीरिक, मानसिक, भौतिक और आध्यात्मिक रूप से मदद करें। ऐसा मानवता से प्यार करके ही संभव है।

अनुशासन

अनुशासन का अर्थ व्यक्तिगत स्तर पर कानून व नियम की आन्तरिक रूप से पालन होता हे और उचित समय और स्थल पर उसके अनुसार तादाम्य में कार्य करना है।

एक सैनिक के लिये अनुशासन का अर्थ सेना के सम्मान को ऊँचा रखने और गौरवान्वित करने के लिये कानून व नियमों का अक्षरश: पालन करना भले ही उसका वरिष्ठ अधिकारी उपस्थित हो या न हो। अनुशासन सेना की क्षमता व शक्ति का आधार है। एक सच्चा सैनिक वही है जो कड़े अनुशासन के भावों से अनुप्राणित हो। उसके लिये अनुशासन आन्तिरिक गुण है। अनुशासन सफलता का आधार है। अनुशासन सबके लिये आवश्यक है।

अनुशासन केवल सैनिक के लिये ही आवश्यक नहीं है वरन् हमारे दैनिक जीवनमें हम सबके लिये भी आवश्यक है। सारांश में यह हमारे जीवन को नियमित और उपयोगी बनाता है।

अनुशासन देखकर पालन में लाया जाया ऐसा नहीं है। यह हमारे नस-नस में समाया होना चाहिये और दैनिक जीवन में और हर आवश्यक अवसर पर इसका पालन हमसे होना चाहिये। हमारे माता-पिता, अध्यापक और कमाण्डर (सैनिक अधिकारी) पर निर्भर करता है कि वह अपने अधीनस्थ या आश्रित के भीतर अनुशासन का भाव कैसे अनुप्राणित करते हैं। अच्छे स्नेहिल पर दृढ़ व्यवहार के व्यक्तित्व द्वारा उजड्ड और असभ्य व्यक्ति के भीतर भी अनुशासन अनुप्राणित किया जा सकता है। परन्तु बहुत हद तक एक विकसित (बालिग) के लिये अनुशासन के पालन की प्रवृत्ति उसके अपने व्यवहार व आचरण पर निर्भर करता है। लेकिन यदि माता-पिता और अध्यापक के द्वारा बाल्वास्था में अच्छे आचरण निर्माण की विधिवत नींव डाली गयी हो और बच्चा अच्छे सभ्य समुदाय से आया हो तो उसमें अनुशासन का भाव अनुप्राणित करना तथा इसे जीवन में उतारने में अपेक्षाकृत आसानी होती है। जबकि यदि मामला उल्टा हो तो उतना ही कठिन है। यह सब यद्यपि सतत और व्यापक ट्रेनिंग और दृढ़ संचालन के द्वारा एक खुरदरे पत्थर जैसे अप्रशिक्षित या अशिक्षित व्यक्ति को भी एक जगमगाते देदीप्यमान रत्न (पत्थर) की तरह अच्छा और चमकदार बनाया जा सकता है।

एक पूर्णरूप से अनुशासित सेना, विषम परिस्थितियों में भी सफलता प्राप्त कर सकती है। मानवजाति के इतिहास में ऐसे अनेक उदाहरण भरे पड़े है। यह नीप्पन के सुअनुशासित सेना ही थी जिसने 203 मीटर हिल्स को पोर्ट आर्थर से कठिनतम परिस्थिति में तीज लिया था। यह पूर्ण अनुशासित नीप्पन की सेना ही थी जिसने अपेक्षाकृत बढ़ी रूसी सेना को मुकडेन युद्ध में शिकस्त दी थी। इसी तरह यह कड़ा अनुशासन ही था जिसकी बदौलत अति दुरुह परिस्थितियों के बावजूद छोटे-छोटे

राजपूतों और मराठों के समूह ने संघर्ष किया था। यह अनुशासन का ही कमाल था कि चाँद बीबी ने अपने किले की सफलता पूर्वक रक्षा की थी।

जिस तरह का संघर्ष हम लोगों के समक्ष है उसमें सफलता तभी मिल सकती है जब प्रत्येक व्यक्ति को अनुशासन के भावों से अनुप्राणित होना होगा तथा वैसे ही सामूहिक यप से भी अनुशासन को जीवन शैली में लाना होगा जब तक अनुशासन हमारा आन्तरिक गुण नहीं बन जाता। इस तरह प्रत्येक व्यक्ति को इस सन्दर्भ में व्यक्तिगत रूप से ध्यान देने की जरूरत है ठीक उसी तरह जैसे किसी कल-कारखाने के सुचारू रूप से संचालन के लिये यह आवश्यक है कि उसके छोटे से छोटे पुर्जे या भाग की देखरेख की जाये।

बिन्दुः

1. सदैव सच बोलो। एक झूठा व्यक्ति कभी भी आदर नहीं पाता।
2. सेना के सम्मान और गौरव को महत्व देना चाहिये।
3. व्यक्ति में कर्म करने की पहल और दृढ़ता दिखाई देना चाहिये।
4. सदैव अपने संरक्षण में रहने वालों के सम्मान की रक्षा करनी चाहिये।
5. सभी कानूनी आदेशों का अनुपालन अवश्य होना चाहिये।
6. अपने से बड़ों के प्रति वफादार बनें।
7. समय के पाबंद बनों। अपने कर्म में कभी देरी न करो।
8. अपने कर्तव्यों का निष्ठापूर्वक पूरा करो।
9. प्रतिदिन व्यायाम करो।
10. पहले आज्ञा पालन करो तब आज्ञा पालन करवाना सीखोगे।
11. किसी कार्यक्रम या सम्मेलन में अपनी सीट अपने वरिष्ठ व्यक्ति या महिला के लिये खालीकर दो।
12. किसी कार्य के क्रियान्वयन और उपलब्धियों में श्रेय अपने नेता को दो चाहे तुम्हारा योगदान कितन भी क्यों न हो।
13. अपने अंदर आत्म विश्वास रखो।
14. गोपनीयता जहाँ अनिवार्य है वहाँ बनाओ।
15. स्वयं को व्यस्त रखो।
16. वफादारी और सहयोग सफलता की ओर ले जाती है।
17. सहानुभूति बनाये रखो।
18. एकता बनाओ। आस्था और बलिदान अपने जीवन के उद्देश्य बनाओ।
19. आदेशों का अक्षरशः और बुद्धिमत्ता पूर्ण पालन करो।
20. एक औरत को अपनी माता के समान सम्मान दो।
21. लालच से बचो। यदि मुश्किल हो तो उससे दूर हट जाओ।
22. ईश्वर में भरोसा करो और सही कार्य करो।
23. ट्राम कार या बस में यात्रा के दौरान बुजुर्गों, महिलाओं या बच्चों को अपनी सीट दो। जल्दबाजी न करो।
24. रेलवे स्टेशन, सिनेमा आदि भीड़ वाले स्थान पर टिकट के लिये कतार में खड़े रहो।
25. स्वयं को धोखा न दें।
26. अपने बड़ों के बारे में तर्क-वितर्क न करो। यह अनुशासन के विरुद्ध है। याद रखो ऐसा करने पर तुभी अपने कनिष्ठ सहयोगियों के लिये तर्क-वितर्क का कारण बनोगे।
27. मद्यपान न करो और स्वयं को मूर्ख न बनाओ। मदिरा न तो खाद्य पदार्थ है और न ही आवश्यकता।
28. जब तक लक्ष्य प्राप्त न हो जाये और स्थायी न हो जाये आराम न करो।
29. किसी गलती के होने पर स्वीकार करने में देर न करो। इससे तुम्हारे साहस और चरित्र का निर्माण होगा।
30. समारोह या सभा में अपने नेता के प्रति असहमति न दर्शाओं। यदि तुम्हारे विचारों से फर्क है तो उनके साथ पहले विचारों को समझकर तादाम्य स्थापित करो।
31. कतार तोड़कर आगे न भागो।
32. अपनी गरिमा को नष्ट न करो, उससे बेहतर मृत्यु है।
33. अपने चरित्र का पतन न करो, चरित्रहीन व्यक्ति खतरनाक और विकट समस्या पैदा करता है।
34. जब तक कोई काम आज हो सकता है उसे कल पर न टालो, समय पर किया काम सफलता देता है।
35. कभी फरेब न करें, क्योंकि यह मृत्यु समान है, कभी डगमगायें नहीं।

आजाद भारत में भी प्रताड़ित होते रहे आजाद हिन्द फौज के सिपाही

अतुल कुमार

- फ कांग्रेस-नीत पहली अंतरिम सरकार के कार्यकाल मे ब्रिटिश अधिकारियों ने कइयों को चढ़ा दिया फांसी पर।
- फ प्रथम सेनाध्यक्ष जनरल के.एम. करियप्पा ने इन्हें अनुशासनहीन बताकर सेना में शामिल करने से मना कर दिया।
- फ 1972 तक तो इन्हें न तो स्वतंत्रता सेनानी माना गया न मिली कोई सुविधा।
- फ नेताओं में सिर्फ समाजवादी नेता डॉ. राम मनोहर लोहिया ने संसद से सड़क तक लड़ी थी इनकी लड़ाई।
- फ आईएनए में कैप्टन रहे अब्बास अली की आत्मकथा 'न रहूं किसी का दस्तनिगर' में है बर्ताव का बेबाकी से वर्णन।

देश के लोगों को आज इतना भर पता है कि द्वितीय विश्व युद्ध की समाप्ति और इसमें धूरी राश्ट्रों की पराजय के बाद उनके साथ मिलकर अंग्रेजों के खिलाफ लड़ रही सुभाष चन्द्र बोस की आजाद हिन्द फौज के केवल तीन युद्धबंदियों - जनरल शाहनवाज खां, कैप्टन प्रेम कुमार सहगल और कैप्टन जी.एस. ढिल्लन को ही भारत में ब्रिटिश शासन के कोर्ट मार्शल का दंश झेलना पड़ा था। जबकि सच्चाई यह है कि ऐसे हजारों सिपाहियों के खिलाफ देश की विभिन्न जेलों में कोर्ट मार्शल की कार्रवाई की गयी थी। आजाद हिन्द फौज के ऐसे ही एक सेनानी रहे हैं कैप्टन अब्बास अली, जिन्हें उस समय फांसी की सजा सुनायी गयी थी और 1945 में कांग्रेस की अंतरिम सरकार ने उन्हें राहत दी थी। अब्बास अली ने हाल में ही अपनी आत्मकथा 'न रहूं किसी का दस्तनिगर' लिखी है और उसमें पंडित नेहरू के नेतृत्व में बनी पहली अंतरिम सरकार द्वारा आजाद हिन्द फौज के सिपाहियों के साथ किये गये बर्ताव का बेबाकी से वर्णन किया है।

इस पुस्तक के अनुसार, स्वतंत्र भारत के पहले सेनाध्यक्ष जनरल के.एम. करियप्पा की नजर में आजाद हिन्द फौज के सिपाही अनुशासनहीन थे और इसीलिए उन्हें आजादी मिलने के बाद भी देश की सेना में शामिल नहीं किया गया। वैसे देशवासियों की नजर में आजादी के लिए अपने तरीके से प्रयास करने की मुहिम में आजाद हिन्द फौज और उसके संस्थापक सुभाश चन्द्र बोस के योगदान को किसी भी कीमत पर कम करके नहीं आंका जा सकता है। लेकिन तथ्य तो यही बताते हैं कि आजाद भारत की पहली ही सरकार ने उनके साथ न्याय नहीं किया।

द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान ब्रिटिश सेना से विद्रोह करने के आरोप में कोर्ट

मार्शल के बाद फांसी की सजा सुनाये गये अब्बास अली आजादी के बाद देश में समाजवादी आंदोलन से जुड़ गये। जनता पार्टी के सदस्य के रूप में उत्तर प्रदेश विधान परिशद के सदस्य रहे कैप्टन अली लिखते हैं कि विश्वयुद्ध में आजाद हिन्द फौज के सिपाहियों को ब्रिटिश सरकार से बगावत कर जापान का साथ देने के आरोप में कोर्ट मार्शल के दौरान फांसी की सजा सुनाये जाने के बाद 1946 में बनी अंतरिम सरकार ने अधिकांश सैनिकों की सजा को मुल्तवी कर दिया लेकिन कुछ एक सिपाहियों को ब्रिटिश अधिकारियों ने फिर भी सजा-ए-मौत दे दी और भारत सरकार कुछ न कर सकी। इतना ही नहीं, कोर्ट मार्शल की कार्रवाई के दौरान भी उन लोगों के साथ जेलों में बुरा बर्ताव किया गया।

कैप्टन अली के मुताबिक, देश की आजादी के लिए आईएनए (आजाद हिंद फौज) में भर्ती हुए सैनिकों को उम्मीद थी कि स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद उन सभी को भारतीय सेना में शामिल कर लिया जाएगा। लेकिन हमारी ही सरकार ने हमारी उम्मीदों पर पानी फेर दिया और वह भी नाकाबिल बताकर। पुस्तक में खुलासा किया गया है कि आजाद हिन्द फौज में एक लाख से ज्यादा सैनिक थे और इनमें से 60,000 से अधिक पहले ब्रिटिश फौज में थे। कैप्टन अली ने पुस्तक में बयां किया है, 'बड़े अफसोस के साथ मुझे लिखना पड़ रहा है कि हम बागियों को यह कहकर आजाद भारत की सेना में शामिल नहीं किया गया कि ये फौजी अनुशासित नहीं हैं। मुझे याद पड़ता है कि देश के पहले सेनाध्यक्ष जनरल करियप्पा ने बयान दिया था कि चूंकि आईएनए के सिपाही अनुशासित नहीं हैं, इसलिए उन्हें दोबारा सेना में शामिल नहीं किया जाएगा और हमारी सरकार ने उनकी यह बात मान ली। अली की किताब के मुताबिक, आईएनए के इन सिपाहियों को सम्मान दिलाने के लिए देश के नेताओं में सिर्फ डॉ. राम मनोहर लोहिया ने बार-बार आवाज उठायी थी।

उन्होंने लिखा है कि आजादी के बाद आजाद हिन्द के फौजियों को भारतीय सेना में शामिल करने या न करने का सवाल उठाना ही निरर्थक था। खैर, अगर यह सवाल उठाया भी गया तो फिर उन्हें बगावती बताकर सेना में शामिल करने से अयोग्य ठहराये जाते वक्त यह सवाल क्यों नहीं उठाया गया कि देश की आजादी के इन दीवानों आखिरकार बगावत किसके खिलाफ की थी। अपने देश के खिलाफ या फिर देश के दुश्मनों के खिलाफ?

पुस्तक में बड़े अफसोस के साथ लिखा गया है कि एक सैनिक के लिए उसके फौजी होने से अयोग्य बताने से बड़ी पीड़ा और कुछ नहीं हो सकती और इस पीड़ा का अंत यहीं नहीं हुआ बल्कि कांग्रेसी सरकार ने इन सिपाहियों और अफसरों को 1972 तक न तो स्वतंत्रता संग्राम सेनानी माना और न ही पेंशन और कोई सुविधा दी। विपक्षी दलों के संसद से सड़क तक संघर्ष और जद्दोजहद के बाद 1972 में इंदिरा गांधी की सरकार ने उन्हें स्वतंत्रता सेनानी माना और पेंशन दी। लेकिन इस समय तक तमाम सिपाही मर चुके थे और जो बचे थे, उनमें से अधिकांश को सरकार ने दस्तावेजी सबूतों के अभाव में आईएनए का सिपाही ही नहीं माना।

आजाद भारत में भी प्रताड़ित होते रहे आजाद हिन्द फौज के सिपाही

अतुल कुमार

जम्मू-कश्मीर में इस बार हुए विधानसभा चुनाव के परिणाम को विश्लेषण कुछ अलग तरह से किया जाना चाहिए। राज्य में इस बार काफी सकारात्मक चीजें दिखी हैं। एक यह कि किसी भी सक्रिय गुट ने इसका जोर-शोर से विरोध नहीं किया है। कभी पांच फीसदी मतदान का रिकॉर्ड रखनेवाले राज्य ने इस बार करीब 68 फीसदी मतदान कर यह एहसास दिलाया कि वह भी लोकतांत्रिक मूल्यों में आस्था रखता है और दूसरी ओर से हाथ बढ़े तो मिलाने में उसे गुरेज नहीं है। दूसरे कश्मीरी अवाम का विश्वास अब चुनाव के जरिए समस्या को हल करने में बढ़ता प्रतीत होता है। लेकिन कश्मीरी आवाम की ओर से बढ़े इस हाथ को थामने की जरूरत है। सकारात्मक प्रतिक्रिया केंद्र की ओर से भी आनी चाहिए। कश्मीरी जनता के बीच विश्वास मजबूत करने के सशक्त उपाय होने चाहिए।

अभी पिछले दिनों जो घटनायं हुई हैं, उन्हें इस दिशा में कतई शुभ नहीं कहा जा सकता है। अमरनाथ श्राइन बोर्ड को पहले जमीन आबंटित किए जाने और फिर उसे वापस कर लेने के कांग्रेसी नाटक से हिन्दूवादी कट्टरपंथी ताकतों को कितना फायदा पहुंचा है इसका अंदाजा तो इसी से लगाया जा सकता है कि पिछले विधानसभा चुनावों में एक सीट पर सिमट गई भाजपा को जम्मू क्षेत्र में इस बार 11 सीटें मिल गई। दूसरी ओर कश्मीर और जम्मू के लोगों के बीच जो सांप्रदायिक खाई बनी वह अलग।

यहां याद रखने लायक बात यह है कि जम्मू-कश्मीर की जनता सांप्रदायिक विद्वेश के सबसे गहरे दिनों में सौहार्द की मिशाल मानी जाती थी। विभाजन के दौरान जब सारा देश सांप्रदायिक दंगों और विष में झुलस रहा था, जम्मू-कश्मीर में अलग तरह की खुशनुमा बयार बह रही थी। जहां पूरे देश में सांप्रदायिकता बढ़ने पर थी तो राज्य अपनी सदियों पुरानी धर्मनिरपेक्ष छवि बनाने को आतुर था। यही कारण था कि कभी मुस्लिम कांफ्रेंस के नाम से गठित राज्य की पार्टी नेशनल कांफ्रेंस में परिवर्तित हो गयी थी। यही नही जब धार्मिक आधार पर पूरे देश में पाकिस्तान की मांग हो रही थी, मुस्लिम बहुल आबादी वाला यह राज्य शेख अब्दुल्ला के नेतृत्व में इसके खिलाफ भारत से लोकतांत्रिक संबंध स्थापित करने को व्याकुल हो रहा था। गरचे हिन्दू महाराजा हरिसिंह राज्य की जनता पर किए अपने अत्याचारों और भ्रष्टाचार को छुपाने का लालच दिए जाने पर जिन्ना और पाकिस्तान की ओर झुक रहे थे।

श्राइन बोर्ड जमीन विवाद से इस सांप्रदायिक एकता के तार कमजोर होते नजर आए हैं। जम्मू के आंदोलनकारियों द्वारा कश्मीर घाटी का हुक्का पानी बंद करने की घृणास्पद घटना से घाटी में इतना विद्वेश और गुस्सा भड़का कि वहां के लोगों ने जम्मू के व्यापारियों और उद्यमियों द्वारा सप्लाई और तैयार माल का बहिष्कार करना शुरू कर दिया था। घाटी के लोगों को करीब दो महीने तक जम्मू के आंदोलनकारियों ने एक तरह से बंधक बना लिया था। न तो घाटी में सामानों की आपूर्ति करने जा रहे व्यापारिक ट्रकों को जाने दिया गया और न ही उनका संपर्क अन्य क्षेत्र से होने दिया गया। इस विद्वेश का नतीजा हुआ कि घाटी ने भी जम्मू से अपना नाता तोड़ लिया। घाटी के लोगों ने सुदूर राजस्थान से अपनी जरूरतों का सामान खरीदा पर जम्मू से नहीं। इसी दौरान सीमा पार के कश्मीर से संबंध बनाने का आंदोलन घाटी में चला जिसमें दर्जन भर से अधिक लोग पुलिस गोली के शिकार हुए। कोई आश्चर्य नहीं कि पाकिस्तानी एजेंसियां इस हालात का फायदा उठाए।

इस पूरे घटनाक्रम में राज्य की कांग्रेस सरकार की भूमिका अपराध के स्तर तक निष्क्रियता की रही। उसने पहले तो जमीन विवाद को बढ़ने दिया फिर सांप्रदायिक ताकतों को भी नियंत्रित नहीं किया। ऐसे में कश्मीर में बना विश्वास टूटने की प्रबल आंशका से इनकार नहीं किया जा सकता।

स्थिति को संभालना जरूरी है। ऐसे में घाटी के लोगों को विश्वास में लिया जाना चाहिए। राज्य की नवगठित नेशनल कांफ्रेंस-कांग्रेस सरकार को चाहिए कि वह नये सिरे से निश्छल प्रयास शुरू करे और विश्वास बहाली की प्रक्रिया को आगे बढ़ाए। आतंकवादी संगठन तो इसी फिराक में रहेंगे ही कि राज्य की जनता में धार्मिक आधार पर फूट पड़े जिसका फायदा वह उठा सकें।

आतंकवाद से भी भयानक है अमेरिका पर निर्भरता

(अखिल हिन्द फारवर्ड ब्लॉक की 10-11 जनवरी 2009 को केन्द्रीय कमिटी की बैठक में पारित प्रस्ताव)

मुंबई पर गत 26 नवंबर को हुए आतंकी हमले के बाद की घटनाओं से एक बार फिर इस खतरनाक तथ्य का खुलासा हुआ कि भारत की निर्भरता अमेरिका पर अनेक क्षेत्रों में दिनोंदिन बढ़ती ही जा रही है। हमारी विदेश नीति, आर्थिक नीति और आतंरिक सुरक्षा संबंधी मामलों में भी अमेरिकी दखलंदाजी की व्यापकता को देखा गया है। अमेरिका पर हमारे राष्ट्रीय विषयों की इस कदर निर्भरता ने हमें इसे अत्यधिक गंभीरता से लेने को मजबूर किया है। इससे हमारे दिमाग में वह शंका एक बार फिर से घूग गयी जिसके बारे में वामदलों ने संप्रग सरकार को उस समय चेताया था जब वह पूरे देश के विरोध और संसद का आपत्तियों को दरकिनार कर अमेरिका के साथ द्विपक्षीय परमाणु करार पर दस्तखत करने जा रही थी। इस करार पर दस्तखत होने के साथ ही मनमोहन सरकार अमेरिका के साथ रणनीतिक साझेदारी में उतर गई और इसी के बाद से अमेरिका के कारण उत्पन्न विभिन्न संकटों से भारत पर असर पड़ता रहा है। अमेरिका द्वारा पैदा गंभीर आर्थिक संकट और विश्वव्यापी मंदी ने दुनिया के अन्य पूंजीवादी देशों की तरह ही भारत को भी अपनी चपेट में ले लिया। इसके तत्काल बाद ही मुंबई पर भीषण आतंकी हमला हुआ जिसने 11 सितम्बर 2001 को अमेरिका के वर्ल्ड ट्रेड टॉवर पर हुए आतंकी हमले की यादों को ताजा कर दिया।

अब संप्रग सरकार के नेतागण दावा कर रहे हैं कि वे अंतरराष्ट्रीय आतंकवाद के खिलाफ लड़ाई लड़ रहे हैं। वे यह स्पष्ट करने की कोशिशें करते रहते हैं कि भारत की लड़ाई पाकिस्तान जैसे किसी देश विशेष के खिलाफ नहीं है। लेकिन इसमें कपटचाल यह है कि चूंकि मुंबई पर हमला करनेवाले आतंकी पाकिस्तान से आए थे इसलिए पाकिस्तान इसकी जिम्मेदारी से केवल यह कहकर अपना मुंह नहीं छिपा सकता कि ये आतंकी कोई पाकिस्तानी नागरिक नहीं बल्कि, 'गैर राज्यीय ताकतें' हैं। यहां शायद यह तथ्य छूट जाता है कि आतंकी अपने लिए उर्वर जमीन पाकिस्तान, अफगानिस्तान जैसे देशों में ही पाते हैं और वहीं से वे सारी दुनिया पर निशाना साधते रहते हैं। उनका सबसे निंदनीय हमला अमेरिकी सरकार के खिलाफ 9/11 का हमला था। इसके बाद भी उनकी कार्यवाही जारी है और भारत इन हमलों का सबसे बड़ा शिकार बन गया है। इस मामले में जो सबसे बड़ा प्रश्न हमारे सामने खड़ा होता है, वह यह कि अंतरराष्ट्रीय आतंकवाद क्यों न केवल अमेरिकी साम्राज्यवाद को ही निशाना बनाता है बल्कि उसके सहयोगियों पर भी हमला कर रहा है और अमेरिका से निकटता के कारण क्यों भारत इसका शिकार बन रहा है। इसका उत्तर शायद समय दे, पर हमें भविष्य पर नजर रखने और अति सतर्क रहने की जरूरत है।

प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह ने शिलॉग में नॉर्थ-ईस्ट हिल यूनीवर्सिटी में 3 जनवरी को भारतीय विज्ञान कांग्रेस का उद्घाटन के बाद मीडिया से बातचीत में कहा कि भारत आतंकवाद को जड़ मूल से खत्म करने के लिए किसी भी हद तक जाएगा। यही बात हम अमेरिका राष्ट्रपति जार्ज डब्ल्यू बुश से भी 9/11 के हमले के बाद सुन चुके हैं। लेकिन इसके बावजूद आतंकवाद बदस्तूर जारी है और भारत सबसे अधिक इसका शिकार है।

मुंबई हमले के तुरंत बाद हमने पाया कि भारत में बड़ी संख्या में अमेरिकी राजनयिक आ गये। इनमें अमेरिकी विदेशमंत्री कोंडालीजा राइस, राष्ट्रपति के चुनाव में हारे नेता जॉन मैक्केन, अमेरिकी राजदूत मलफोर्ड और अन्य शामिल थे। ये सब भारत और पाकिस्तान के बीच चक्कर काट रहे थे। एफबीआई की तर्ज पर भारत ने भी नेशनल इंवेस्टिगेटिंग एजेंसी (एनआईए) और आतंक निरोधक कानून बना और भारत के आतंक विरोधी अभियान को अमेरिकी विशेषज्ञ निर्देशित करने लगे हैं। हमले का साक्ष्य जुटाकर भारतीय गृहमंत्री अमेरिका में उसे दिखाने ले गए और आगे की कार्यवाही के लिए वहीं विचार-विमर्श करने पहुंचे। अमेरिका ने भी कहा कि वह पाकिस्तान पर अपने प्रभाव का इस्तेमाल कर मामले को सुलझाने का प्रयास करेगा। उनका भारत और पाकिस्तान दोनों के साथ सैन्य व अन्य स्वार्थ निहित है। लेकिन भारत में अमेरिका की मनहूस उपस्थिति से आखिरकार भारत में आनेवाले दिनों में समस्यायें और बढ़ने ही वाली है। यह बहुत सोचनेवाली बात है कि भारत पर इस समय अमेरिका का सर्वाधिक प्रभाव और दबाव है। अमेरिका अपने व्यापारिक हितों को साधने के लिए भी स्थितियों का लाभ उठाने की फिराक में रहता है। मुंबई पर हमले की छाया में ही संप्रग सरकार ने 1 जनवरी 2009 को अमेरिका से 210 करोड़ डॉलर के आठ पी- 81 लाँग रेंज मैरीटाइम रिकॉसिंएंस एयरक्राफ्ट खरीदने के सौदे पर हस्ताक्षर किया है। इस समझौते से भारतीय नौसेना को भी अपनी पुरानी आठ तुपोलेव- 142 एम बेड़े की जगह पर अमेरिका से ऐसे ही आठ दूसरे एयरक्राफ्ट खरीदने का अधिकार मिल गया है। इसका आर्डर दिया जाना है।

अमेरिका की अंतरिक्ष की बड़ी बोईग कंपनी के साथ हुआ समझौता अमेरिका के साथ हमारी बड़े रक्षा समझौते का संकेत है। यह दोनों देशों के बीच बढ़ते साझेदारी का भी संकेत है। संप्रग सरकार इसके परिणामों के लिए जिम्मेदार होगी।

पाकिस्तान पर बढ़ता अंतरराष्ट्रीय दबाव उसे आतंकी नेटवर्क को खत्म करने के लिए मजबूर कर सकता है। सैन्य संघर्ष से यह संभव नहीं। अंतरराष्ट्रीय कूटनयिक दबाव और जन जागरूकता ही वर्तमान परिस्थितयों में भारत के लिए लाभकारी हो सकेगा। लेकिन इसके लिए भारत को सही परिप्रेक्ष्य में काम करते हुए आगे बढ़ना होगा। भारत को अपनी स्वतंत्र और गुट निरपेक्ष छवि को बरकरार रखना होगा।

महान क्रान्तिकारी नेताजी सुभाष चन्द्र बोस के जन्म तिथि 23 जनवरी को स्मरण करते हुये जनवादी कवि हरिहर ओझा 'तरण' की श्रद्धांजलि

एक और जनक्रान्ति के लिये

देश के शोषक-उत्पीड़क का, साम्राज्यवाद से गहरा रिश्ता,
मेहनत कशों को राज न मिल जाये, ऊपर लगा है इनका पहरा ।।1।।
शासन के सिंहासन पर जा, आसन मार बैठे अपराधी,
दोनों हाथों से लूट रहा है, मुँह से जपता गाँधी-गाँधी।।2।।
वंशवाद विषबेल चढ़ गयी, राजनीति की ठठरी पर,
जाति धर्म की रेल दौड़ती, धन-धन-तंत्र की पटरी पर।।3।।
त्राहि-त्राहि चहुँ ओर मची है, कैसे आये सच्ची आजादी,
जनता का जनतंत्र हो कैसे, मिट पाये कैसे बरबादी।।4।।
जब एक ओर जनक्रांति लिये, हाथों में प्राणांजलि होगी,
अब वही अमर शहीदों के प्रति, सच्ची श्रद्धांजलि होगी।।5।।

नेताजी सुभाष चन्द्र बोस और साम्राज्यवाद विरोधी संघर्ष

डॉ. बरुण मुखर्जी

जिस समय नेताजी सुभाष चन्द्र बोस ने ब्रिटिश साम्राज्यवाद के खिलाफ अपना अनवरत और अविराम संघर्ष शुरू कर रखा था, अंग्रेजों की नजर में वह उसके सबसे बड़े दुश्मन घोषित थे। सुभाष बाबू मानते थे कि भारत और यहां की जनता की तमाम समस्याओं और दुश्वारियों की जड़ में केवल साम्राज्यवादी शासन और शोषण है। इसलिए इन शैतानी ताकतों को यहां से बाहर करना अति आवश्यक है। इसलिए आजादी की लड़ाई में उनका मुख्य ध्येय भारत को केवल स्वायत्त शासन दिलाना नहीं बल्कि पूर्ण आजादी दिलाना और ब्रिटिश साम्राज्य से हर तरह का संबंध विच्छेद करना था। उनके अनुसार न केवल ब्रिटिश साम्राज्यवाद बल्कि दुनिया की तमाम साम्राज्यवादी ताकतों का चरित्र एक जैस होता है। उनका अस्तित्व ही उपनिवेशों या शासित देशों की संपत्ति के दोहन-शोषण पर टिका होता है। इसलिए जब तक इन ताकतों का सफाया नहीं हो जाता उनके अधीन का कोई भी देश अपनी प्रगति और विकास नहीं कर सकता। इसलिए साम्राज्यवादियों से समझौता करने का कोई सवाल ही नहीं पैदा होता और न ही आधे मन से उनके खिलाफ लड़ाई चलायी जा सकती है। वह मानते थे कि इन ताकतों को देश से पूरी तरह से बाहर करना ही एकमात्र विकल्प है और इसके लिए उनके खिलाफ सीधा मोर्चा खोला जाना चाहिए। और इसीलिए सुभाष ने अकेले पूरे जोर शोर से उनके खिलाफ अनवरत और समझौताविहीन संघर्ष जारी रखा।

भारतीय राजनीति पटल पर सुभाष का आगमन 1921 में असहयोग आंदोलन के दौरान हुआ। उसके तुरंत पहले उन्होंने अपनी आईसीएस की परीक्षा की थी और ब्रिटिश हुकूमत की सेवा में जाने से इनकार करते हुए पद से त्यागपत्र दे दिया था। राजनीति में देशबंधु चितरंजन दास उनके गुरु थे। 24 दिंसबर 1921 को जब ब्रिटिश युवराज प्रिंस ऑफ वेल्स कलकत्ता आनेवाले थे तो सी.आर. दास के आह्वान पर युवा सुभाष ने देश भर में इसके विरोध में हड़ताल का नेतृत्व किया। इसके बाद दास और सुभाष-दोनों को गिरफ्तार कर लिया गया। यह ब्रिटिश साम्राज्य के साथ सुभाष का पहला सीधा संघर्ष था।

उनका दूसरा संघर्ष काफी दिनों बाद हुआ। पहले भारतीय मेयर के रूप में कलकत्ता नगर निगम में चितरंजन दास के काल में जब सुभाष कलकत्ता नगर के मुख्य कार्यकारी अधिकारी की हैसियत से 'निगम समाजवाद' को साकार करने के काम में गहरे रूप से संलग्न थे, तो ब्रिटिश सरकार ने सुभाष को रेगुलेशन 3 ऑफ 1818 के तहत अचानक गिरफ्तार कर लिया और बेहरामपुर जेल भेज दिया। इसके बाद उन्हें कई जेलों में रखा गया और अंत में उन्हें मंडाले जेल में डाल दिया गया। उन पर सरकार का मुख्य आरोप था कि सुभाष का संपर्क क्रांतिकारियों के साथ है। हालांकि इसके समर्थन में सरकार के पास कोई साक्ष्य नहीं था। ब्रिटिश खुफिया की एक रिपोर्ट (होम पॉलिटिकल फाइल नं. 379 ऑफ 1924) में कहा गया था कि सुभाष क्रांतिकारियों के एक समूह के साथ मिलकर सुदूर पूर्व के रास्ते विदेशों से आग्नेयास्त्रों की तस्करी कर उन्हें भारत लाने के एक षड्यंत्र में शामिल हैं। इस आरोप मे उन्हें 1927 तक विभिन्न जेलों में बंद रखा गया और उनपर घोर अमानवीय अत्याचार किये गये। प्रसंगवश यह उल्लेख करना प्रासंगिक रहेगा कि भारती भूमि पर करीब दो दशक के राजनीतिक जीवन में सुभाष को 11 बार बंदी बनाया गया।

1927 में जब सुभाष को स्वास्थ्य आधार पर रिहा किया गया तो उनका शारीरिक हालत बिल्कुल गिर चुकी थी, फिर भी उन्होंने साम्राज्यवाद से संघर्ष के लिए पूरे जोश-खरोश के साथ कमर कस ली। मंडाले जेल में उन्हें वहां बंद कई अन्य क्रांतिकारियों के संपक्र में आने का मौका मिला था। इन क्रांतिकारियों में त्रैलोक्य चक्रवर्ती, बिपिन बिहारी गांगुली, प्रो. ज्योतिश चन्द्र घोष आदि शामिल थे। इन क्रांतिकारियों से मुलाकात ने सुभाष को आजाद भारत में समाजवाद की स्थापना के विचार को और निखार मिला। 20 के दशक के अंत से लेकर 40 के दशक तक सुभाष द्वारा साम्राज्यवाद के खिलाफ किये गये बहुआयामी संघर्षों में अनेक मोड़ आये और इससे साबित हो गया कि वह दुनिया के महानतम क्रांतिकारी थे। उनका संघर्ष न केवल भारत को आजादी दिलाने तक सीमित था बल्कि वह मानवता को त्राण दिलाने के लिए भी संघर्ष कर रहे थे। उनका दृढ विश्वास था कि 'भारत की आजादी में ही मानवता की आजादी है'।

1928 से सुभाष ने देश का तूफानी दौरा किया और बहुत सारे युवा सम्मेलनों को संबोधित किया। उन्होंने न केवल ब्रिटिश साम्राज्यवाद के खिलाफ अनवरत संघर्ष का शंखनाद किया बल्कि उनका संघर्ष आजादी के बाद देश के समाजवादी नवनिर्माण के लिए भी था। उनका मत था कि केवल राजनीतिक आजादी ही साथ मे आर्थिक और सामाजिक आजादी भी मिलनी चाहिए। उन्होंने इंडिपेंडेंस लीग की बंगाल शाखा का मसौदा घोषणा पत्र लिखने की पहल की जिसमें कहा गया था कि भारतीय जनता की सच्ची आजादी का मतलब उन्हें आर्थिक दासता और सामाजिक असमानता से मुक्ति दिलाने में ही निहित है।

कांग्रेस के 1928 के कलकत्ता अधिवेशन में सुभाष ने महात्मा गांधी की इच्छा के खिलाफ आधिकारिक प्रस्ताव में संशोधन पेश किया जिसमें मांग की गयी थी कि अंग्रेजों से तथाकथित समझौतावादी स्व शासन की जगह पूर्ण आजादी की मांग की जाए। हालांकि गांधीजी के नेतृत्व में कांग्रेस के दक्षिणपंथियों के दबाव में सुभाष का यह प्रस्ताव 973 के मुकाबले 1350 मतों से गिर गया लेकिन उनके साम्राज्यवाद विरोधी अभियान ने देश की जनता पर अमिट छाप छोड़ी। इससे पहले भी 1927 के मद्रास अधिवेशन में सुभाष ने जवाहरलाल नेहरू और आयंगार के साथ मिलकर पूर्ण स्वराज का प्रस्ताव पारित कराने में सफल हो गये थे जिसपर बाद में गांधीजी ने जवाहर लाल को झिड़की भी लगा दी थी। गांधीजी 1928 में भी पूर्ण स्वराज कें प्रस्ताव का विरोध करते रहे लेकिन सुभाष के जबर्दस्त दबाव के बाद उन्होंने भी इस प्रस्ताव को अपनी सहमति दे दी और अंततः 1929 के लाहौर अधिवेशन में पूर्ण स्वराज का प्रस्ताव पारित हो गया। लेकिन इस समय तक सुभाष और आगे बढ़ चुके थे और उन्होंने एक ताजा संशोधन पेश करते हुए प्रस्ताव रखा कि कांग्रेस को वैकल्पिक सरकार का गठन कर लेना चाहिए और अंग्रेजों को सभी तरह का कर अदायगी पर रोक के लिए देशव्यापी आंदोलन, आम हड़ताल और सिविल नाफरमानी शुरू कर देनी चाहिए। लेकिन कांग्रेस के दक्षिणपंथियों ने उनके सारे संशोधनों को अस्वीकार करा दिया। फिर भी सुभाष ने अपने क्रांतिकारी रणनीति को त्यागने से इनकार कर दिया और अंततः उन्होंने इसे 14 वर्षों बाद 1943 में विदेश में अपने द्वारा गठित आजाद हिन्द सरकार के तहत लागू कराया और आजाद हिन्द फौज को लेकर ब्रिटिश साम्राज्य पर आखिरी हमला बोल दिया।

सुभाष बाबू देश में रहते हुए 1930 के दशक में दोतरफा संघर्ष चलाते रहते थे। एक ब्रिटिश साम्राज्यवाद के खिलाफ और दूसरा कांग्रेस के अंदर जमे समझौतापरस्त दक्षिणपंथियों के खिलाफ। और परिणामस्वरूप ये दोनों ताकतें भी सुभाष के अंग्रेजों के खिलाफ सीधी लड़ाई के हर कदम का विरोध करती रहती थीं। 1922 में जब चौरी चौरा कांड के बाद गांधीजी ने अचानक रफ्तार पकड़ चुके असहयोग आंदोलन को रोकने का ऐलान किया तो सुभाष ने तुरंत इसका विरोध किया। इसी तरह जब गांधीजी ने मार्च 1931 में गांधी-इरविन पैक्ट के तहत पूरे शबाब पर पहुंच चुके सविनय अवज्ञा आंदोलन को खत्म किया तो उस समय भी सुभाष ने इसका कड़ा प्रतिवाद किया और इसे निहायत गलत कदम बताया। सुभाष ने 10 जून 1933 को लंदन में हुए तीसरे इंडियन पोलिटिकल सेशन में खुद उपस्थित होकर जोरदार ढंग से इस पैक्ट की मुखालफत की थी। उन्होंने साफ तौर पर ऐलान कर दिया कि ब्रिटिश साम्राज्यवाद और भारतीयों के बीच कोई भी समान हित नहीं है इसलिए इन दोनों के बीच समझौते का कोई सवाल ही पैदा नहीं होता।

मार्च 1939 में त्रिपुरी अधिवेशन में दूसरी बार कांग्रेस अध्यक्ष निर्वाचित होने पर सुभाष चन्द्र बोस ने अपने अध्यक्षीय भाषण में ऐलान कर दिया कि हमें अंग्रेजों को भारत छोड़ने के लिए अधिकतम छह माह के समय का अल्टीमेटम दे देना चाहिए।

नहीं तो हम उनके खिलाफ देशव्यापी आंदोलन छेड़ देंगे। लेकिन गांधीजी-जवाहरलाल- पटेल- राजेन्द्र प्रसाद के नेतृत्व में कांग्रेस के दक्षिणपंथी धड़े ने अंग्रेजी राज के खिलाफ इस तरह के सीधे संघर्ष की नीति को पसंद नहीं किया। इसलिए उन्होंने इसे रोकने के लिए षड्यंत्र का सहारा लिया जिसके परिणामस्वरूप सुभाष बोस को अंतत: कांग्रेस अध्यक्ष पद से इस्तीफा देना पड़ा। लेकिन दक्षिणपंथियों के ये षड्यंत्र और विरोध सुभाष की राह नहीं रोक पाए। सुभाष ने तत्काल फॉरवर्ड ब्लॉक की स्थापना कर ली और इसके झंडे तले उन्होंने अंग्रेजों के खिलाफ संघर्ष शुरू कर दिया। उन्होंने नए दौर के साम्राज्यवाद के खिलाफ संघर्ष को और व्यापकता प्रदान करने और संघर्ष की धार को और तेजी देने के लिए भारत छोड़ दिया और यहां से अफगानिस्तान होते हुए जर्मनी पहुंच गये। वहां से सुदूर पूर्व के सिंगापुर होते हुए और अंतत: वहां उन्होंने आजाद हिंद फौज की कमान संभाल ली और अप्रवासी भारतीयों व पूर्व ब्रिटिश भारतीय सैनिकों को लेकर तदर्थ सरकार का गठन कर लिया। इन्होंने ब्रिटिश-अमेरिकी सेना से सीधा मोर्चा लिया और ब्रिटिश साम्राज्यवाद के चंगुल से भारत को मुक्त कराने के लिए ऐतिहासिक 'दिल्ली मार्च' शुरू किया। नेताजी सुभाष चन्द्र बोस द्वारा शुरू किये गये साम्राज्यवाद विरोधी संघर्ष का दुनिया के इतिहास में कोई सानी नहीं है।

हालांकि आजाद हिन्द फौज व्यावहारिक तौर पर अपने अभियान में सफल नहीं हो पायी और उसके सैनिकों को युद्ध अपराधी के रूप में गिरफ्तार कर दिल्ली के लालकिले में उनपर अभियोग चलाया गया, लेकिन उन्हें फिर भी नैतिक विजय मिली थी। जब नवंबर 1945 में आजाद हिन्द फौज के वीरतापूर्ण संघर्षों की कहानी भारत पहुंची तो सारा देश गर्व से फूल उठा। सारे देश में क्रांति की ज्वाला भड़क उठी। छात्र, नौजवान, सरकारी कर्मचारी, नौसेना और थलसेना सब जगह नवंबर 45 से जुलाई 46 के बीच विद्रोह भड़क उठा और हड़तालें होने लगीं। सब जगह नेताजी और आजाद हिन्द फौज की वीरतापूर्ण गाथाओं से जोश भरा और वे ब्रिटिश सरकार के खिलाफ विद्रोह कर उठे। 1947 में सत्ता हस्तांतरण का यह सबसे बड़ा कारण बना।

नेताजी के साम्राज्यवाद विरोधी संघर्ष का मौलिक उद्देश्य पूरी तरह से स्पष्ट और दूरदर्शितापूर्ण था। वह केवल ब्रिटिश शासन की ही मुखालफत नहीं करते थे। वह केवल यह नहीं चाहते थे कि भारत सदियों पुराने ब्रिटिश शासन से मुक्त हो जाए बल्कि उनका सपना और उनकी योजना अधिक व्यापक और खोजी थी। वह आजादी के बाद देश की व्यवस्था में आमूलचूल नवनिर्माण के पक्षधर थे। लेकिन यह नवनिर्माण समाजवादी आधार पर होना था। उनका अंतिम लक्ष्य था 'भारत में समाजवाद की स्थापना' और वह भी भारतीय तरीके से और भारतीय परिस्थितियों में। नेताजी हर तरह के शोषण और असमानता को समाप्त करना चाहते थे और इसके लिए राजनीतिक आजादी के साथ ही सामाजिक और आर्थिक की हिमायत करते थे, एक मुक्त और वर्गहीन समाज चाहते थे और सबसे ऊपर वह एक नयी व्यवस्था की स्थापना करना चाहते थे जो निश्चित तौर पर समाजवाद पर आधारित होती।

कब्जे में गाजा

(अखिल हिन्द फारवर्ड ब्लॉक की 10-11 जनवरी 2009 को केन्द्रीय कमिटी की बैठक में पारित प्रस्ताव)

इजरायल सरकार ने न केवल गाजापट्टी पर कब्जा कर रखा है बल्कि उसने वहां के करीब 15 लाख निवासियों को भी बंधक बना रखा है जो इस समय इस बर्बर यहूदी कब्जे से उत्पन्न अनेक तरह के कश्ट भोगने को मजबूर हैं। इजरायली सरकार ने गाजा के लोगों की खाद्यान्न, पेयजल व दवाएं सहित सभी तरह की मूलभूत आवश्कताओं को रोक रखा है। गाजा पर जमीन, समुद्र और हवा से हमले हो रहे है। इन हमलों में 800 से अधिक लोग मारे गए हैं और हजारों लोग गंभीर रूप से घायल हुए हैं। नवंबर 2008 के शुरू से ही इजरायल ने यहां संयुक्त राष्ट्र द्वारा भेजी गयी मानवीय राहत सामग्री की खेप को भी आने नहीं दिया है। यहां तक कि संयुक्त राश्ट्र महासचिव द्वारा वहां राहत सामग्री की आपूर्ति संबंधी अनुरोध को भी इजरायल ने ठुकरा दिया है। इजरायल के इस अमानवीय हमले के कारण पूरी गाजापट्टी इस समय बड़े कब्रगाह में तब्दील हो चुकी है।

अमेरिका और यूरोपीय संघ गाजा में जनसंहार में इजरायल को पूरा समर्थन दे रहे हैं। यहां तक कि अंतरराश्ट्रीय समुदाय द्वारा किये जा रहे विरोध प्रदर्शनों को भी अमेरिका और इजरायल की सरकार अनदेखा कर रही है। संयुक्त राष्ट्र ने इस हमले को सामुहिक सजा के तौर पर माना है। लेकिन अमेरिका इसे भी नजरंदाज कर चुका है और इजरायल के समर्थन में बयान जारी कर

बांग्लादेश में लोकतंत्र की वापसी

(अखिल हिन्द फारवर्ड ब्लॉक की 10-11 जनवरी 2009 को केन्द्रीय कमिटी की बैठक में पारित प्रस्ताव)

बांग्लादेश अवामी लीग की नेतृत्ववाली महाजोत ने वहां 29 नंबवर को हुए आम चुनावों में भारी बहुमत से जीत दर्ज की है। इससे इस देश में लोकतंत्र बहाली की सुनिश्चित हुई है। महाजोत को 300 सदस्यीय संसद में 258 सीटें मिली हैं जिसमें से अकेले अवामी लीग को 229 सीटें मिली हैं।

बांग्लादेश पिछले दो वर्षो से इमरजेंसी के गिरफ्त में था। इस चुनाव से सेना नियंत्रित अंतरिम सरकार का दौर समाप्त हो गया है। चुनाव परिणाम का सबसे महत्वपूर्ण पहलू यह रहा कि बांग्लादेश के लोगों ने जमात-ए-इस्लामी जैसी सांप्रदायिक कट्टरपंथी ताकतों को सिरे से नकार दिया है। इसी का परिणाम रहा कि 2001 मे 17 सीटें जीतनेवाला जमात इस बार मात्र दो सीटों पर सिमट कर रह गया। इस चुनाव में बेगम खालिदा जिया की नेतृत्ववाली बीएनपी को मात्र 27 सीटें ही मिल पाई जिसे पिछले चुनाव में देश की संसद में भारी बहुमत मिला था और उस समय उसने वहां सरकार बनाई थी।

अवामी लीग कभी सामाजवादी अर्थव्यवस्था और राजनीतिक नीति की रहनुमाई करनेवाली पार्टी थी पर शेख हसीना के नेतृत्व में इसने अपनी नीतियों में बदलाव लाते हुए निजी क्षेत्र की ओर अपना रुख कर दिया और इस तरह उसका चरित्र बिल्कुल बदल गया। यह सबसे बड़ा कारण था कि पिछले चुनाव में बांग्लादेश की गरीब जनता ने उसे नकार दिया था। लेकिन इस बार के चुनाव में अवामी लीग ने डिजिटल बांग्लादेश का नारा दिया और विकास के मुद्दों पर अपने को केंद्रित किया, जिससे युवापीढ़ी खासकर पहली बार वोट देनेवाली पीढी खासा आकर्षित हुई, जो कुल मतदाताओं का एक तिहाई है।

अब बांग्लादेश की नई सरकार के सामने कई समस्यायें है। 40 फीसदी से अधिक बांग्लादेशी इस समय एक डॉलर से भी कम में अपना प्रतिदिन का जीवन यापन करते हैं। देश का करीब एक तिहाई हिस्सा हर साल मानसून के दौरान बाढ़ की चपेट में आ जाता है। बेरोजगारी, बढ़ता आतंकवाद, ढांचागत व्यवस्थाओं का चरमरा जाना, प्राकृतिक संसाधनों का विकास, गरीबी आदि अन्य मुद्दे हैं जो आज मुंह बाए खड़े हैं। दूसरी बड़ी समस्या वहां के भारत विरोधी आतंकी समूह हैं जो बांग्लादेश की धरती का इस्तेमाल करते हुए भारत के खिलाफ अभियान चला रहे है। इस चुनाव में हार गई कट्टरपंथी ताकतें वास्तव में जनता के आदेश को स्वीकार करना नहीं चाहती है जिससे देश में राजनीतिक गतिरोध पैदा होने की आशंका है। बांग्लादेश के अतीत का अनुभव तो यही बताता है कि इस तरह की ताकतें ऐसे में मजबूत ही हुई हैं।

अखिल हिन्द फॉरवर्ड ब्लॉक बांग्लादेश की जनता को बधाई देता है कि उसने लोकतंत्र के प्रति अपनी गहरी निश्ठा का इजहार किया है, जिससे देश में बहुदलीय लोकतंत्र की वापसी हुई है। आशा की जानी चाहिए कि नयी सरकार लोगों की समस्याओं पर ध्यान देगी और लोगों को इससे निजात दिलाएगी, लोकतंत्र को मजबूत करेगी, भारत में अवैध घुसपैठ को रोकेगी, बांग्लादेश की जमीन से भारत के खिलाफ अभियान चला रहे आतंकी गुटों पर लगाम लगाएगी और क्षेत्र में शांति और व्यवस्था को मजबूत करने में योगदान करेगी।

फारवर्ड ब्लॉक की मध्य प्रदेश कमिटी का गठन

दिनांक 8 जनवरी 2009 को केन्द्रीय सचिव मण्डल द्वारा मध्य प्रदेश अखिल हिन्द फारवर्ड ब्लॉक की प्रांतीय इकाई को विगत् 22 दिसंबर 2008 को भंग करने के संदर्भ में एक विस्तारित बैठक भोपाल के गाँधी भवन स्थित कुबेर हाल में प्रदेश से आये नेताओं की उपस्थिति एवं मध्य प्रदेश के प्रभारी साथी श्री बीर सिंह महतो (पूर्व सांसद) एवं साथी एस.पी. तिवारी द्वारा आहूत वरिष्ठ साथी प्रो. सूर्यभान सिंह यादव की अध्यक्षता में संपन्न हुई।

आयोजन के प्रारंभ होने के पूर्व साथी एस.पी. तिवारी ने मुम्बई बम के क्रूर आतंकी हमले में मृत सुरक्षाअधिकारियों, सुरक्षाकर्मियों एवं बेकसूर नागरिकों के असमय निधन पर शोक एवं क्षोभ व्यक्त किया। इसके साथ ही विभिन्न जनांदोलनों में सक्रिय भूमिका निभाने वाले पूर्व प्रधानमंत्री श्री वी.पी. सिंह के असामयिक निधन को अपूरणीय क्षति बताते हुये समस्त हुतात्माओं को दो मिनट मौन रखकर अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की।

सभा को प्रारंभ करते हुये प्रदेश के प्रभारी साथी एस.पी. तिवारी ने विस्तार से उन बातों पर प्रकाश डाला जिनके कारण अखिल हिन्द फारवर्ड ब्लॉक की मध्य प्रदेश इकाई को केन्द्रीय सचिव मण्डल द्वारा भंग करने के लिये बाध्य होना पड़ा। श्री तिवारी ने पार्टी के एक माह व्यापी सदस्यता अभियान की रूपरेखा भी प्रस्तावित की। यह कार्य सुचारू रूप से संचालित तथा संपन्न हो सके, इस हेतु छोटी किन्तु मजबूत प्रांतीय सांगठनिक समिति के गठन का सुझाव एवं नेताजी सुभाष चन्द्र बोस का जन्मदिवस 23 जनवरी को 'देश प्रेम दिवस' के रूप में विभिन्न आयोजनों द्वारा जोर-शोर से मनाने एवं अविस्मरणीय बनाने का परामर्श भी दिया।

चर्चा को आगे बढ़ाते हुये सांसद एवं प्रभारी वरिष्ठ साथी बीर सिंह महतो ने पार्टी हित को सर्वोपरि रखकर अपनी सारी क्षमता एवं शक्ति सांगठनिक एवं संवैधानिक तरीके अपनाकर मजबूती प्रदान करने का आह्वान किया। इसके साथ ही मध्य प्रदेश के हितों के लिये जो भी आवश्यक होगा उसकी पूर्ति के लिये केन्द्रीय कमिटी से पूरा करवाने की अनुशंसा एवं सिफारिश का पूरा-पूरा आश्वासन दिया।

सभा अध्यक्ष ने भी चर्चा में विस्तार से आने वाली कठिनाइयों एवं सांगठनिक कार्य में पूरा सहयोग देने की बात कहीं।

बैठक में सर्वसम्मति से निम्नानुसार प्रस्ताव पारित किये गये -

(1) आगामी 10 जनवरी से 10 फरवरी तक एक माह व्यापी सदस्यता अभियान चलाया जायेगा। इसके लिये 19 जिलों की जिम्मेदारी विभिन्न साथियों को सौंपी गयी है।

19 जिलों सदस्यता अभियान को सुचारु रूप से चलाने हेतु जिन साथियों को अधिकृत किया गया है, इसे और सकारात्मक स्वरूप प्रदान करने हेतु, जो कि जिला समितियों का सम्मेलन करके संवैधानिक समितियाँ गठित कराने एवं प्रांतीय सम्मेलन आयोजित करेंगे हेतु एक प्रांतीय सांगठनिक समिति भी गठित की गयी, जो इस प्रकार है-

(1) साथी सुभाष अग्रवाल (सयोंजक उज्जैन संभाग), (2) साथी देवेन्द्र तोमर (संयोजक चंबल संभाग), (3) साथी प्रो. सूर्यभान सिंह यादव (संयोजक जबलपुर संभाग), (4) साथी श्याम सुन्दर बिश्नोई (संयोजक नर्मदापुरम संभाग), (5) साथी बलराम मिश्रा (संयोजक शहडोल संभाग), (6) साथी सलमा सौदागर (संयोजक रीवा संभाग), (7) इसके साथ ही साथी राम अवतार पचौरी इस समिति के प्रदेश संयोजक होंगे तथा ग्वालियर संभाग के संगठन का कार्य भी देखेंगे।

गृहयुद्ध में फंसा श्रीलंका

(अखिल हिन्द फारवर्ड ब्लॉक की 10-11 जनवरी 2009 को केन्द्रीय कमिटी की बैठक में पारित प्रस्ताव)

श्रीलंका में सरकार और विद्रोही लिबरेशन टाइगर्स ऑफ तमिल ईलम (लिट्टे) के बीच छिड़ा संघर्ष एक अहम मोड़ पर पहुंच गया है। सरकार ने लिट्टे को पूरी तरह से कुचल देने के लिए अंतिम तौर पर रणनीति तैयार कर ली है। लेकिन इस युद्ध का पीड़ित केवल लिट्टे ही नहीं है, श्रीलंकाई तमिल भी इस युद्ध की विभीषिका को झेलने को मजबूर हैं। ह्यूमन राइट वाच की रिपोर्ट के अनुसार वानी के युद्धक्षेत्र में फंसे आम नागरिकों की संख्या कोई कम नहीं है। यह संख्या 2,30,000 से लेकर 3,00,000 तक है। यहां आम लोग युद्धक्षेत्र में सिकुड़ते जा रहे हैं। लिट्टे द्वारा लड़ी जा रही अपने अस्तित्व की लड़ाई और सरकार द्वारा व्यवस्था को कायम करने की लड़ाई में अनेक लोग बेघर हो गए हैं और भूखमरी, बीमारी और खतरनाक अंधे भविष्य के गर्त में धकेले जा रहे हैं।

श्रीलंकाई तमिलों का मुद्दा और लिट्टे व सरकार के बीच छिड़ा युद्ध दो अलग मुद्दे हैं। सरकार को तमिलों की मूलभूत समस्याओं की ओर ध्यान देना चाहिए। लिट्टे के महत्वपूर्ण ठिकानों और उसके द्वारा नियंत्रित क्षेत्रों पर कब्जा करने के बाद सरकार ने वारजोन में फंसे आम लोगों को बाहर से हर तरह की मूलभूत मानवीय जरूरतों की चीजों की सप्लाई पूरी तरह से बंद कर दी है। यह तमाम अंतरराष्ट्रीय कानूनों की पूरी तरह से अवहेलना है। यह सही है कि लिट्टे को दुनिया के करीब तीस देशों ने या तो प्रतिबंधित कर रखा है या उसे कड़ी निगरानी मे रख रखा है। लेकिन संघर्ष की अंत और क्षेत्र में शांति व खुशहाली भी तभी हो सकती है जब श्रीलंकाई सरकार और लिट्टे बातचीत की टेबल पर आयें। लिट्टे को भी युद्ध छोड़कर श्रीलंकाई समाज की मुख्यधारा में आना चाहिए ताकि अनेक बेशकीमती जानों को बचाया जा सके।

भारत सरकार को भी चाहिए कि वह तमाम कूटनयिक स्रोतों का इस्तेमाल करते हुए श्रीलंकाई तमिलों की सुरक्षा सुनिश्चित करे। भारत के लिए यह मुद्दा बहुत ही भावनात्मक और संवेदनशील भी है। लेकिन उसे इस मुद्दे को महत्ता देते हुए सुलझाने का प्रयास करना चाहिए ताकि लंबे समय से संघर्षरत तमिलों को राहत मिल सके। वार जोन के लोगों को मूलभूत मानवीय जरूरतों की आपूर्ति भी सुनिश्चित होनी चाहिए।

नेशनल प्रोग्रेसिव डिफेंस एम्प्लायी फेडरेशन का पहला राष्ट्रीय अधिवेशन

नेशनल प्रोग्रेसिव डिफेंस एम्प्लायी फेडरेशन (एन.पी.डी.ई.एफ.) का पहला राष्ट्रीय अधिवेशन मध्य प्रदेश के कटनी नगर स्थित आर्डिनेंस फैक्ट्री के परिसर में कामरेड दादा रूपमे चटर्जी नगर में बने कामरेड एस.एम. बैनर्जी मंच पर 18-19 दिसम्बर 2008 को संपन्न हुआ। जिसमें आर्डिनेंस फैक्टरी तिरची, आर्डिनेंस फैक्टरी अवादी, एंजिन फैक्टरी अवादी, एच.वी.एफ. अवादी, केन्द्रीय आर्डिनेंस फैक्टरी डिपो अवादी, आर्डिनेंस फैक्टरी पुणे, ए.एफ.के. आर्डिनेंस फैक्टरी वारांगांव, आर्डिनेंस फैक्टरी इटारसी, आर्डिनेंस फैक्टरी चन्द्रपुर, आर्डिनेंस फैक्टरी भण्डारा, आर्डिनेंस फैक्टरी कटनी, सी.क्यू.ए. (डब्ल्यू) जबलपुर, एस.ए.एफ. कानपुर और आर्डिनेंस फैक्टरी प्रतिष्ठान हजरतपुर आदि के टी.यू.सी.सी. और एल.पी.एफ. से संबंधित युनियन संगठनों से आये 200 से अधिक प्रतिनिधियों ने हिस्सा लिया। सम्मेलन की अध्यक्षता ओ.सी.एफ. अवादी के साथी वी. वेलुस्वामी, एस.ए.एफ. कानपुर के एम. पी. देव (सेवानिवृत्त) और आर्डिनेंस फैक्टरी कटनी के साथी राजन तिवारी ने की।

सैकड़ों साथियों के एन.पी.डी.ई.एफ. जिंदाबाद के नारों के बीच एन.पी.डी.ई. एफ. ध्वजारोहण टी.यू.सी.सी. के महामंत्री साथी एस.पी. तिवारी ने की। इसके पश्चात् एन.पी.डी.ई.एफ.के संयोजक के. आई.पी. मेनन एवं साथी वेलूस्वामी ने देश के शहीदों की प्रतिमाओं पर माल्यार्पण किया।

कटनी लेबर यूनियन के महामंत्री साथी संजय यादव द्वारा अतिथियों एवं सदस्यों का आत्मीय स्वागत किया गया। साथी एस.पी. तिवारी ने अधिवेशन का विधिवत उद्घाटन किया। अपने उद्घाटन भाषण में प्रतिनिधियों को संबोधित करते हुये उन्होंने रक्षा क्षेत्र की उन विसंगतियों जैसे निजीकरण, ठेकेदारी प्रथा, मकान भाड़ा में बढ़ोतरी, दरबानों को रात्रि भत्ता, आल इण्डिया डिफेंस सिविल कैंटीन में कार्यरत कर्मचारियों के पुराने भुगतान आदि की समस्याओं के निदान को संघर्ष हमारे महासंघ द्वारा पूरी निष्ठा और ईमानदारी से किया जायेगा। साथी के. इन्दुप्रकाश मेनन ने संह संयोजक की हैसियत से उन कारणों को विस्तारपूर्वक प्रतिपादित किया जिसके लिये महासंघ के गठन की आवश्यकता पड़ी साथ ही श्री मेनन ने ए.आई.डी.ई.एफ., बी.एम.एस. तथा इंटक के संघ जो संस्थानों में वर्षों से जमे हुये हैं, बताया कि विभिन्न कारणों से पूरी तरह नाकामयाब रहे हैं। मेनन ने निजीकरण बंद किया जाये, ठेकेदारी पर श्रमिक प्रथा समाप्त हो, नयी पेंशन नीति घोषित हो, छठें वेतन आयोग के अनुसार नया वेतनमान स्वीकृत हो आदि मुद्दों पर खुलकर चर्चा की जिसे सम्मेलन में ध्वनिमत से पारित कर दिया गया। अध्यक्षीय पद से संबोधित करते हयु साथी एम.पी. देव ने कहा कि पुराने महासंघों से कर्मियों का मोह भंग हो गया है और वे हमारे नवगठित महासंघ की ओर बड़ी आशा और विश्वास के साथ निहार रहे हैं। सम्मेलन के दूसरे अध्यक्षीय पद से बोलते हुये साथी वी. वेलूस्वामी ने बताया कि हमारा बहुत पुराना सपना एन.पी. डी.ई.एफ. के निर्माण से पूरा होता दिख रहा है।

सुरक्षा प्रतिष्ठानों में निजीकरण समाप्त हो, अंतर्राष्ट्रीय ठेकेदारी प्रथा, वेतन विसंगतियाँ, पदोन्नति के अवसर, छठवें वेतन आयोग में सारे मतों को जनवरी 2006 से लागू किया जाये, ओवर टाईम एलाउंस में बढ़ोतरी की जाये, सभी रिक्त पदों पर संस्था के कर्मियों द्वारा भरा जाये, आयकर में छूट, मकान भाड़े में वृद्धि, कार्य अवधि की सीमा निश्चितता, कार्य का सही-सही आवंटन, यात्रा भत्ते में वृद्धि आदि प्रस्ताव साथी वी. वेलुस्वामी द्वारा रखे गये। जिन्हें सर्वसम्मति से पारित कर लिया गया। यह भी प्रस्तावित किया गया कि अपनी मांगों को विधि सम्मत एवं प्रासंगकि तरीकों से मनवाने के प्रयास किये जायेंगे।

इसके साथ ही राष्ट्रीय स्तर पर संघ के निम्नलिखित पदाधिकारियों का चुनाव सर्वसम्मति से किया गया - मुख्य संरक्षक - श्री देवब्रत बिश्वास (पूर्व सांसद एवं महासचिव अखिल हिन्द फारवर्ड ब्लॉक), सम्माननीय अध्यक्ष - श्री सी. कुप्पूस्वामी (सांसद - डी.एम.के.)) एवं अध्यक्ष - साथी एस.पी. तिवारी (महासचिव टी.यू.सी.सी.), कार्यवाहक अध्यक्ष - श्री एम. शुमुगम (महासचिव एलपीएफ), मुख्य उपाध्यक्ष - श्री हितेन बर्मन (सांसद - फारवर्ड ब्लॉक), श्री ए. कृष्णास्वामी (सांसद), श्री एन.एस. कोलटे (आर्डिनेस फैक्टरी इटारसी) के अलावा महासचिव - साथी के. इन्दुप्रकाश मेनन (ओएफडीआर पुणे), सह महासचिव - साथी वी. वेलुस्वामी (ओसीएफ अवादी) सचिव - संजय यादव (आर्डिनेस फैक्टरी कटनी), श्री इजहार अहमद (एसएएफ कानपुर), श्री के. कन्नन (आर्डिनेस फैक्टरी तिरची), संगठन सचिव - श्री आर.के. पासी (सीक्यूए(डब्ल्यू) जबलपुर), श्री मोहम्मद मीरा (ओसीएफ अवादी), श्री जी.जी. महाबालेश्वरकर (आएफडीआर पुणे), एवं कोषाध्यक्ष - श्री चन्द्रशेखर होम्मुखे (आएफडीआर पुणे)।

साथी नौशाद अली, अध्यक्ष लेबर यूनियन, आर्डिनेंस फैक्टरी कटनी ने सभी का धन्यवाद करते हुये सम्मेलन के समाप्ति की घोषणा की।

सायं 5 बजे एक जनसभा का भी आयोजन किया गया जिसमें भारी संख्या में कटनी के आर्डिनेंस फैक्ट्री के कर्मचारियों ने हिस्सा लिया।

गाजा पर इजरायली अत्याचार का हम मूकदर्शक नहीं रहेंगे

फिलस्तीनी इलाकों पर पिछले दिनों इजरायल द्वारा की गई बर्बर फौजी कार्यवाही द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान नाजियों की बर्बरता की याद दिला देते हैं। गाजा के करीब 15 लाख निर्दोष निवासी, जिनमें बच्चे और महिलायें पिछले डेढ़ साल से इजरायली बर्बरता का शिकार तो थे ही अब पिछले दो हफ्तों से उन पर फौजी हमला भी किया जा रहा है जिसमें 800 से ज्यादा फिलस्तीनी मारे जा चुके हैं। गाजा का जनजीवन पूरी तरह खत्म होने के कगार पर है। इजरायल के दोतरफा हमले से लंबे समय से यहां खाद्यान्न, दवाएं और पेयजल, बिजली और अन्य न्यूनतम जरूरत की चीजों की भयंकर किल्लत हो गयी है। उस पर तुर्रा यह कि अमेरिका और यूरोपीय संघ भी इजरायल के पक्ष में ही खड़ा है। इसलिए उन्होंने गाजा में संयुक्त राष्ट्र द्वारा जरूरी जीवनोपयोगी सामानों की आपूर्ति की संयुक्त राष्ट्र के अनुरोध को उजड्डपन के साथ नकार दिया है। दु:ख की बात यह है कि पूरी दुनिया गाजा में जारी इस हृदयविदारक जनसंहार की मूकदर्शक बनी बैठी है। हम इससे पहले भी हम इराक में अमेरिका द्वारा बमबारी कर लाखों निर्दोष लोगों की निर्मम हत्या को देख चुके हैं।

इस मामले में भारत की भूमिका बेचारगी वाली रही है। प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह और विदेशमंत्री प्रणब मुखर्जी दोनों ने इजरायली कार्रवाही की निंदा करते हुए एक-एक बयान जारी कर अपने कर्तव्यों की इतिश्री मान ली। इजरायली बर्बरता का विरोध करते हुए उससे सैन्य संबंध समाप्त करने और उस पर कूटनयिक दबाव डालने जैसी प्रभावशाली रणनीति अख्तियार करना तो इनके लिए दूर की ही

कौड़ी रही है।

उधर पाकिस्तानी प्रधानमंत्री युसूफ रजा गिलानी द्वारा जारी बयान में एक और मजेदार बात सामने आयी। उन्होंने सवाल उठाया कि क्यों भारत, अमेरिका और अन्य देश केवल मुंबई हमले को लेकर इतना हाय तौबा मचा रहे हैं जबकि गाजा में इतने सारे निर्दोष स्त्री-पुरुषों और बच्चों की निर्मम हत्याओं पर सारी दुनिया चुप्पी साधे हुए है। दरअसल गिलानी अंतरराष्ट्रीय बिरादरी के दोहरे मापदंड को निशाना बनाना चाह रहे थे लेकिन अनजाने ही उन्होंने इस बयान में इस कटु सत्य को उजागर कर दिया कि मानवता के खिलाफ विभिन्न स्थानों पर और विभिन्न रूपों में हमले बदस्तूर जारी हैं। इस मामले में एक और बात साफ हो गयी है कि हमलों की अधिकांश घटनाओं में अमेरिका जरूर शामिल होता है। चाहे वह इराक पर प्रत्यक्ष हमला करे या गाजा में इजरायल के कंधे पर बंदूक रखकर अप्रत्यक्ष रूप से जनसंहार कराए। हम अपनी याद्दाश्त पर जोर डालें तो हाल ही मे वाशिंगटन की मीडिया में एक चौंकानेवाले तथ्य का खुलासा हुआ था। इससे इजरायल की खतरनाक प्रवृत्ति का खुलासा होता है। इसमें इजरायल ने एक बार अमेरिका के सहयोगी के तौर पर ईरान के मुख्य परमाणु संयंत्र को खास तरह के बंकर ध्वंसक बमों से उड़ाने की योजना बना ली थी। जहां तक अन्य देशों का सवाल है, बहुत कम को छोड़कर अधिकतर देश अमेरिका के समक्ष नतमस्तक रहते हैं।

अब जरूरत आ पड़ी है कि दुनिया के शांतिवादी लोग एकजुट होकर इस तरह की हमलावर ताकतों का जबर्दस्त प्रतिकार करें। इजरायल हमलों को बंद करे और संयुक्त राष्ट्र तत्काल अपनी कार्रवाही करे।

फारवर्ड ब्लॉक तमिलनाडु का विशेष सम्मेलन

अखिल हिन्द फारवर्ड ब्लॉक तमिलनाडु इकाई ने 28 दिसम्बर 2008 को प्रातः 10 बजे मदुरै के अर्चना होटल में एक विशेष सम्मेल का आयोजन किया। सम्मेलन की अध्यक्षता राष्ट्रीय अध्यक्ष साथी एन. वेलप्पन नायर जी ने की। साथी वी.एस. नवामनी ने प्रतिनिधियों का स्वागत किा। उन्होंने तमिलनाडु में पार्टी के भूतपूर्व कमियों को बताया और राष्ट्रीय महासचिव साथी देवब्रत बिश्वास के दर्शाये निर्देशों का अनुसरण करने का अनुरोध किया, सदस्यता फार्म सदस्यों को सीधे दिया या था वह सदस्यों द्वारा फार्म भरकर मिल गया। थोड़े ही समय में सदस्यों ने सदस्यता ली। जिला कमिटियों का गठन का प्रतिनिधियों का चुनाव किया जा चुका है। इस सम्मेलन में भी लगभग 700 से भी अधिक प्रतिनिधियों ने भाग लिया। सम्मेलन में अखिल हिन्द फारवर्ड ब्लॉक का संविधान अँग्रेजी से तमिल भाषा में अनुवाद करके प्रतिनिधियों को दिया गया। साथी वी.एस. नवामनी ने साथी नरेन दे, कृषि मंत्रि पश्चिम बंगाल सरकार का धन्यवाद करते हुये कहा कि यह सब उनके सहयोग के संभव नहीं था।

साथी एण्डी थेवर के अस्वस्थता के कारण उनका भाषण पढ़ा गया। साथी पी. वी. कादिरवन ने रिपोर्ट प्रस्तुत किया। अपने रिपोर्ट में उन्होंने विरोध, धरना, प्रदर्शन, रोड़ रोको, अन्य वामपंथी पार्टियों के साथ धरने को प्रस्तुत किया। उन्होंने अन्य जिलों में किये जा रहे प्रगतिशील कार्यों को चिन्हित किया। जिला स्तरीय प्रगति को बताते हुये उन्होंने कहा कि फारवर्ड ब्लॉ ए.डी.एम.के. के उम्मीदवार को तिरूअनंतपुरम के विधान सभा चुनाव में संपूर्ण समर्थन देने की घोषणा की। साथी पसुम्पन पाण्डियन ने सम्मेलन में प्रस्ताव पेश किया। उन्होंने बताया जन-विरोधी, राज्य की कांग्रेस सरकार की निकम्मेपन, भारत में असुरक्षा की स्थिति आदि की व्याख्या की। अतः उन्होंने कांग्रेस की अवहेलना करने का सुझाव दिया। आगे कहा कि श्रीलंका में तमिलों की सुरक्षा के राजनीतिक हल निकालना चाहिये। उन्होंने तमिलनाडु के मछुआरों के सुरक्षा की भी मांग की। उन्होंने कहा कि कच्छ थीवु जो श्रीलंका को दान दिया गया है उसे वापिस ले लेना चाहिये। इसके अलावा पेट्रोल, डीजल, कूकींग गैस के दामों में कमी की जानी चाहिये। साथी थिरूप्पुर राजाशेखरन ने प्रस्ताव पर बहस किया। चैन्नई से मन्जु गणेश, विरूधु नगर से शंकरनारायण, डिंडीगुल से थानीकोडी, तिरूनेवेली से करूणागारा पाण्डियन, थिरूपुर से प्रकाश, इरोड से मुरूगावेल, कोयम्बटूर से थिक्कानन, सिवागंगाई से बालाकृष्णनन, रामानाथपुरम से विग्नेश, थंजावुर से किसान के राज्य महासचिव इंजी. माया थेवर व मुरूगनदम, यूथ लीग राज्य महासचिव के. सुब्बुराज ने भी बहस में अपने-अपने विचार रखे। फारवर्ड ब्लॉक के केन्द्रीय कमिटी सदस्य एवं कृषि मंत्री पश्चिम बंगाल सरकार श्री नरेन दे, सांसद श्री नरहरी महतो, ने भी अपने वक्तव्य दिये। फारवर्ड ब्लॉक महासचिव साथी देवब्रत बिश्वास ने विशेष भाषण दिया। उन्होंने नेताजी और थेवरजी के मार्ग पर पार्टी को बढ़ाने के महत्व पर जोर डाला। उन्होंने बताया कि कांग्रेस और भाजपा जैसी जन-विरोधी पार्टियों को आने से रोकना होगा। इसके अलावा उन्होंने अनुरोध किया कि नेताजी सुभाष चन्द्र बोस का जन्मदिन 23 जनवरी को देश प्रेम दिवस के रूप में मनाये और नेताजी और थेवर के आदर्शों के जरिये साम्राज्यवाद विरोधी उद्देश्यों को ऊपर लाना है। उन्होंने एक नयी कार्यालय धारकों की घोषणा की। एक 12 राज्य सचिव सदस्यीय सहित 41 सदस्यीय राज्य कमिटी की घोषणा, जिसमें साथी एण्डी थेवर (अध्यक्ष), साथी वी.एस. नवामनी (उपाध्यक्ष), साथी पी.वी. कादीरवन (महासचिव), सचिव - साथी एन. पसुम्पन, साथी पसुम्पन पाण्डियन, साथी एम. महेश्वरन एवं साथी एन. राजशेखरन के अलावा साथी पी.एस. जयरामन को वित्तीय सचिव निर्वाचित किया गया। डिंडीगुल के साथी पी.एस. जयरामन ने सबका धन्यवाद किया।

सायं के समय थिरूमंगलम में थेवर जी की प्रतिमा के पास एक जन सभा का आयोजन किया गया और राज्य के कार्यालय वाहकों का परिचय कराया गया और ए. डी.एम.के. के प्रतिनिधी को विधानसभा चुनाव में सहयोग की घोषणा की गयी।

केरल यूथ लीग की बैठक

3 और 4 जनवरी 2009 को ऑल इण्डिया यूथ लीग (ए.आई.वाई.एल.) की केरल राज्य की विशेष बैठक तिरूवनंतपुरम में सम्पन्न हुई। बैठक कामरेड कालाधरन पेरूम्पुझा नगर में हसन माराकार हॉल में हुई। बैठक साथी कालाधरन पेरूम्पुझा नगर महासचिव केरल राज्य के दु:खद निधन पर आयोजित की गयी।

3 जनवरी 2009 को राज्य समिति ने प्रस्ताव को अंतिम रूप दिया और विभिन्न राज्यों से प्राप्त रिर्पोटों को पढ़ा। साथी अरूण एस. सासी, कार्यकारी महासचिव यूथ लीग ने 2007 के बाद अब तक के संगठन का ब्यौरा दिया। बैठक में कमिटी निर्मित हुई जिसमें साथी थंकचन वर्गिज, साथी अरूण एस.सासी, साथी जी. राधाकृष्णन, साथी दिपीन, साथीा के. पुरम, साथी कुरीपुझा, अजीथ, साथी डेन्नी पालीपत और मनकौड़ सुभाष उपस्थित थे।

4 जनवरी 2009 को प्रतिनिधी सत्र की बैठक प्रातः 10 बजे आरम्भ हुयी। अखिल हिन्द फारवर्ड ब्लॉक के राष्ट्रीय अध्यक्ष साथी एन.वेलप्पन नायर ने सम्मेलन का उद्घाटन किया और युवाओं को नेताजी सुभाष चन्द्र बोस के जीवन से प्रेरणा लेने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि नेताजी के नारे जैसे कि एकता, विश्वास और

बलिदान अब भी देश भक्तों के मंत्र है। साथी नरेन डे, कृषि मंत्री, पश्चिम बंगाल सरकार बैठक में मुख्य अतिथि थे। उन्होंने नेताजी के राजनैतिक दर्शन का उल्लेख किया। उन्होंने नेताजी के ऐतिहासिक जीवन को पाठ्यक्रम में शामिल किये जाने की मांग और युवाओं में देशभक्ति विकसित करने के लिये एक अभियान छेड़ने की बात कही।

यूथ लीग के राष्ट्रीय अध्यक्ष साथी मोइनुद्दीन शम्स ने युवा प्रतिनिधियों को संबोधित करते हुये कहा कि देश को आजादी मिले 61 वर्ष से अधिक हो गया पर भारत सरकार ने अब तक विशेष राष्ट्रीय युवा नीति बनाने में अक्षम रही है। और क्रियान्वयन हेतु राष्ट्रीय युवा काउंसिल नहीं बना सकी। ऑल इण्डिया यूथ लीग बेरोजगारी के विरुद्ध राष्ट्रव्यापी स्तर पर विरोध रैलियों आयोजित करेगी।

दोपहर में आर्थिक संकट, आतंकवाद और भारतीय युवा पर संगोष्ठी आयोजित की गयी। जिसमें फारवर्ड ब्लॉक के राष्ट्रीय सचिव साथी जी. देवराजन मुख्य वक्ता थे। उन्होंने कहा कि अर्थव्यवस्था के उदारीकरण की नीतियाँ आये आर्थिक संकट का कारण बताय। नयी आर्थिक नीतियों से धनी वर्ग को फायदा पहुँचा है। गरीब लोग उदारीकरण, निजीकरण और भूमण्डलीकरण के शिकार हैं। गहरे विषाद के कारण युवा हताश है और असमाजिक और राष्ट्र विरोधी शक्तियों के चंगुल फँसता जा रहा है। बढ़ता हुआ सांप्रदायी उन्माद युवाओं को बर्गला रहा है। उन्होंने प्रतिनिधियों से आग्रह किया कि नयी आर्थिक नीति जो साम्राज्यवादी और पूँजीवादी शक्तियों से निर्देशित हैं, सांप्रदायिकता और आतंकवाद पनप रहा है।

ऑल इण्डिया यूथ लीग के राज्य महासचिव साथी वी.राम मोहन ने प्रतिनिधियों का स्वागत किया और कहा कि अखिल हिन्द फारवर्ड ब्लॉक के विकास में ऑल इण्डिया यूथ लीग महती भूमिका निभा सकता है। उन्होंने युवाओं को नेताजी के रास्ते पर चलकर नव-निर्माण करने का आह्वान किया। साथी आर. ब्रह्मानन्दन, सदस्य केन्द्रीय समिति फारवर्ड ब्लॉक ने साथी कालाधरन को याद करते हुये उनके निधन को एक बहुत बड़ा नुकसान कहा। साथी थंकचन वर्गीज ने समारोह का संचालन किया। साथी दिपीन थक्केपुरन, साथी रॉय, साथी थोतुवा सुरेन्द्रन, साथी कुरीपुझा अजीथा, सािि के प्रभारन, साथी मनकौड़, सुभाष, साथी जी राधाकृष्णनन ने भी संबोधित किया।

साथी एस. सासी ने संगठनात्मक रिपोर्ट पेश की। नये प्रस्तावों द्वारा सरकार से आग्रह किया गया कि शिक्षा सेवा आयोग के गठन और विस्तृत राष्ट्रीय युवा नीति बनायी जाये और नेताजी के जीवन के इतिहास को पाठ्यक्रम में शामिल किया जाये और बिना किसी भेदभाव के नरेगा लागू किया जाये।

35 सदस्यीय राज्य समिति गठित हुयी, जिसके अध्यक्ष साथी दिपीन थेक्केपुरम (त्रिसुर), महासचिव साथी अरूण एस. सासी (तिरूवनंतपुरम), उपाध्यक्ष - साथी राधा कृष्णनन (कोल्लम), साथी टी. नौशाद (कोझीकोड), सचिव - डेन्नी पालीपत (एर्नाकुलम), साथी कुरीपुझा जीथ (कोल्लम) एवं वित्त सचिव साथी बैजू मेनाचेरी (एर्नाकुलम) निर्वाचित किये गये।

तिरूअनंतपुरम शहर ऑल इण्डिया यूथ लीग के झण्डों, नेताजी और भगत सिंह के चित्रों, फ्लैक्स बोर्डों, पोस्टरों और बैनरों से ऑल इण्डिया यूथ लीग की राज्य इकाई द्वारा सजा दिया गया था।

मोईरांग से जलियांवाला बाग तक साम्राज्यवाद विरोधी जत्था

साम्राज्यवाद के विरुद्ध प्रदर्शन करने के हमारी केन्द्रीय कमिटी के निर्णयों के अनुसार, मणिपुर के मोइरांग (जहाँ नेताजी ने आजाद हिन्द सरकार के कार्यालय की स्थापना की थी और पहली बार आजाद भारत की मिट्टी पर आजाद भारत का झण्डा लहराया था) से जलियांवाला बाग (पंजाब के अमृतसर में जहाँ सैकड़ों बहादुर देश भक्तों ने ब्रिटिश साम्राज्यवाद की गोलियों का शिकार हुये थे) तक 8 फरवरी से 1 मार्च 2009 तक एक जत्थे का आयोजन आरम्भ हो रहा है। बांग्लादेश-भारत-पाकिस्तान पिपुल्स फोरम इस जत्थे का नेतृत्व करेगा। अन्य सिविल सोसायटी संगठन, सॉलिडेरिटी फोरम, फ्रेण्डशीप एसोसिएशन विभिन्न-विभिन्न स्थानों पर जत्थे में शामिल होंगे। अतः आपसे अनुरोध है कि - जत्थे के संबंध में अपने क्षेत्र में चर्चा करें; जत्थे के स्वागत का प्रबंध करें; जत्था सदस्यों के लिये आवश्यक भोजन और रहने की व्यवस्था करे; जत्थे और उसके उद्देश्यों का अधिक से अधिक प्रचार में ले आयें; समान विचारों वालों संगठनों को शामिल करने का प्रयास करें; जत्थे के स्वागत सभाओं के आयोजन के लिये अधिक से अधिक जनता की भागीदारी सुनिश्चित करें; जत्थे के स्वागत के लिये चालक सहित गाड़ियों, लाउड स्पीकर आदि का प्रबंध करें।

जत्थे की मांगें - साम्राज्यवाद के हस्तक्षेप के नाकारात्मक नतीजों का प्रचार करना; बढ़ते साम्प्रदायिक तनावों को रोकना; धर्मनिरपेक्षता एवं धार्मिक सौहार्द की महत्ता का प्रचार करना; साम्राज्यवाद-आतंकवाद -साम्प्रदायवाद विरोधी राष्ट्रव्यापी आन्दोलनों के लिये युवा पीढ़ी को शामिल करना।

जत्थे के रूट का समय सारणी -

8.2.2009	मोइरांग,
9.2.2009	इम्फाल, सेनापति, कोहिमा, दिमापुर,
10.2.2009	दबाका, नागांव,
11.2.2009	नखोला, गुवाहाटी,
12.2.2009	पलाशबारी, चन्दौली, अगिया, गोलपारा, बोंगाईगांव,
13.2.2009	कुमारग्राम, बीरपारा, जलपाईगुड़ी,
14.2.2009	न्यू जलपाईगुड़ी, सिलिगुड़ी, इस्लामपुर,
15.2.2009	डलखोला, राजगंज, इताहार, इंग्रेज बाजार,
16.2.2009	जंगीपुर, बहरामपुर,
17.2.2009	प्लासी, कृष्णानगर, बारासात, कोलकाता,
18.2.2009	बर्धमान, दुर्गापुर, आंडल, आसनसोल,
19.2.2009	निरशा, धनबाद, गोमो, पारसनाथ, दुमरी, बागोदर,
20.2.2009	बरही, कोडरमा, रजौली, नवादा, गिरिआक, बिहार शरीफ,
21.2.2009	बख्तियारपुर, खुरशीदपुर, राघवपुर, पटना, महेर, आरा, ब्रह्मपुर, बक्सर,
22.2.2009	बारा, गहमर, जमानियाँ, वाराणसी,
23.2.3009	जौनपुर, सुल्तानपुर, लखनऊ,
24.2.2009	उन्नाव, कानपुर,
25.2.2009	भोगीपुर, इटावा, फिराजाबार, टुण्डला,
26.2.2009	आगरा, मथुरा, नई दिल्ली,
27.2.2009	पानीपत, करनाल, कुरूक्षेत्र, अम्बाला,
28.2.2009	लुधियाना, फिल्लौर, फगवाड़ा,
1.3.2009	जालंधर, कपूरथला, अमृतसर, अटारी
2.3.2009	वापसी।

पूँजीवाद का पराभव

जयन्त वर्मा

द्वितीय विश्वयुद्ध में ब्रिटेन, अमेरिका, फ्रांस, जर्मनी आदि देशों के चंद धन्नासेठों ने अकूत धन-सम्पदा एकत्र की। लोकतांत्रिक व्यवस्था की कमजोरियों का लाभ उठाकर पूँजी के बल पर सत्ता हासिल करने के बाद उन्होंने दुनिया के विकासशील और कमजोर देशों का भरपूर दोहन किया। लगभग 40 वर्षों तक विश्व दो ध्रुवों में बंटा रहा। सोवियत संघ, चीन, क्यूबा आदि देशों में मजदूर और किसांों का सत्ता पर नियंत्रण होने की वजह से वहाँ मेहनतकश लोगों के जीवन स्तर में गुणात्मक बदलाव आया। ये राष्ट्र पूंजीवाद के दुष्चक्र से बचे और वहाँ चौतरफा प्रगति हुई। उधर पूंजीवादी देशों में शोषणकारी व्यवस्था के चलते सारी दौलत कुछ कार्पोरेट घरानों के नियंत्रण में आ गयी। समाजवादी व्यवस्था में समुदाय के भौतिक संसाधनों का स्वामित्व और नियंत्रण इस प्रकार बंटा होता है, जिससे सामूहिक हित का सर्वोत्तम रूप से साधन हो, साथ ही आर्थिक व्यवस्था इस प्रकार चलायी जाती है ताकि धन और उत्पादन व्यवस्था में इसके विपरीत समुदाय के भौतिक संसाधन तथा धन और उतपादन के साधन पूँजीपतियों के नियंत्रण में होने के कारण सारा मुनाफा उन्हीं की झोली में चला जाता है। मेहनतकश जनता अपनी बुनियादी जरूरतें जुटाने के संघर्ष में ही लगी रहती है।

1990 में सोवियत संघ के पतन के बाद शीतयुग खत्म हुआ और पूँजीवादी देशों के कार्पोरेट घरानों में अपनी बेशुमार पूँजी का दुनिया भर में बेरोकटोक विस्तार करने के लिये भू-मण्डलीकरण, उदारीकरण और निजीकरण की नीतियाँ लागू करवायी। विश्व व्यापार संगठन की अगुवायी में यह खेल चल रहा था कि इसी बीच अमेरिका के अनेक बैंकों के दिवालिया होने की खबरें आने लगीं। पूँजीवाद का अंतर्विरोध अमेरिकी अर्थव्यवस्था में प्रकट हो चुका है। अत्यधिक मुनाफे की लालच में वित्तीय संस्थायें असुरक्षित कर्ज देने की होड़ में शामिल हो जाती हैं। बारीकी से देखें तो अमेरिका की सारी जनता वित्तीय संस्थाओं के क्रेडिटसे की गयी खरीदी से चढ़े कर्ज की किश्तें भरने के लिये मेहनत करती रही है। अमेरिकी परिवारों पर वित्तीय संस्थाओं का कर्ज उनकी खर्च योग्य आमदनी का 122 फीसदी हो गया है।

अमेरिकी कम्पनियों कके मुनाफे में वित्तीय संस्थाओं की हिस्सेदारी 47 प्रतिशत हो गयी है। उत्पादक उपक्रमों ने वित्तीय संस्थाओं की टक्कर में लाभ कमाने के लिये लागत में कटौती और कम से कम कर्मकारों से काम लेना प्रारंभ किया। छंटनी और कम वेतन के कारण समाज की क्रयशक्ति घटी तथा उत्पादन और खपत का संतुलन बिगड़ गया। इसी कारण मंदी का दौर प्रारंभ हुआ। आज अमेरिका की महामंदी ने दुनिया के अनेक देशों को अपनी चपेट में ले लिया है। नोकरियाँ घटने लगी हैं।

भारत के इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेन्ट से निकलने वाले युवा अमेरिकी वित्तीय संस्थाओं में लाखों रुपये प्रतिमाह के पैकेज पर नौकरी प्राप्त करते थे अब उनके लिये रोजगार के लाले पड़ रहे हैं। सट्टेबाजी के चक्रव्यूह में फंसकर पूँजीवादी अर्थव्यवस्था अपनी चमक खोने लगी है। पूँजीवादी के इस पराभव से सबक लेकर भारतीय और अन्य सभी विकासशील देशों के हुक्मरानों को समाजवादी अर्थव्यस्था अपनाने की ओर अपना ध्यान केन्द्रित करना चाहिये। पूँजीवाद के वर्तमान संकट से उबरने में युद्ध बहुत सहायक हो सकता है। भारत और पाकिस्तान के बीच युद्ध होने पर हथियार बनाने वाले अमेरिकी कार्पोरेट घरानों को लाभ होगा। उनके हथियार बिकेंगे तथा मंदी से कुछ राहत मिलेगी। अमेरिका अपने आर्थिक हितों के मद्देनजर दो देशों के बीच तनाव बढ़ाने में उत्प्रेरक का काम करता है।

अब यह स्पष्ट हो गया है कि आतंकवाद को खत्म करने के लिये अमेरिका ने पाकिस्तान को जो आर्थिक सहायता दी थी उससे पाकिस्तानी सेना ने आतंकवादी संगठनों को खड़ा किया। पाकिस्तानी सेना और आतंकवादी संगठन एक ही सिक्के के दो पहलू है। यह बात अमेरिका से छुपी नहीं है, किन्तु पाकिस्तान पर आर्थिक प्रतिबंध लगाने का कदम नहीं उठाया जा रहा है। अमेरिका की आतंकवाद के विरुद्ध लड़ाई की पोल भी खुल रही है। अब देखना है कि अपने अस्तित्व को बचाने के लिये पूँजीवादी अमेरिका संसार में शांति भंग करके कितने मासूमों की बलि चढ़ायेगा।

- साभार नीतिमार्ग